# विद्यापति गीतिका

( अर्थ सहित )

संकलन एवं सम्पादन

**शरदिन्दु चौधरी**

**शेखर प्रकाशन**

पटना - 24

प्रकाशक :
**शेखर प्रकाशन**
2A/39, टेक्स्टबुक कालोनी, इन्द्रपुरी
पटना -24
मोबाइल : 9334102305



प्रथम संस्करण : 3 नवम्बर, 2007
द्वितीय संस्करण : 2013
आवरण चित्र : अरूण कुमार झा

मूल्य : 60 टाका मात्र

मुद्रक : अक्षर प्रिंटर्स
दरियापुर, पटना

**पुस्तक प्राप्ति स्थान**
शेखर प्रकाशन
टेक्स्ट बुक कालोनी, इन्द्रपुरी
पटना-800 024

विशेष आभार
**पं० गोविन्द झा**

**VIDYAPATI GITIKA**

**Edited by**

*Shardindu Chaudhary*

RS.60/-

# प्राक्कथन

एहिमे संगृहीत गीत सभ सात स्रोतसँ लेल गेल अछि- (1) नेपाल तालपत्र, (2) रामभद्रपुर तालपत्र, (3) तरौनी तालपत्र, (4) भाषा-गीत-संग्रह, (5) रागतरंगिणी, (6) नगेन्द्रनाथ गुप्तक विद्यापति पदावली तथा (7) ग्रिअर्सन साहेबक मैथिली क्रेस्टोमैथी। एहिमे स्रोत 1 सँ 5 धरि प्राचीन लिखित स्रोत थिक तेँ अधिक प्रामाणिक मानल जाइत अछि। स्रोत 3क गीत सभ मैथिली डेभलपमेंट फंड, पटना विश्वविद्यालयसँ टिप्पणी सहित प्रकाशित अछि। शेष सभ स्रोतक गीत बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना सँ प्रकाशित विद्यापति-पदावली, भाग 1-3 मे हिन्दी व्याख्या आ पाठ भेदक संग प्रकाशित अछि। विद्यापतिक 710 गीतक परिष्कृत-परिमार्जित पाठ विद्यापति-गीतावली, सम्पादक- गोविन्द झा, मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित अछि। गीतक स्रोत सभक पूरा विवरण शैलेन्द्र मोहन झाक विद्यापति (प्रकाशक मैथिली अकादमी, पटना)पोथीमे देल गेल अछि।

प्रस्तुत संग्रहमे प्रत्येक गीतक प्रसंग आ प्रकार देखा कऽ अक्षरशः अनुवादक शैलीमे व्याख्या कयल गेल अछि। मूलक कठिन शब्द कतहु-कतहु व्याख्यामे यथावत् राखि ओकर अर्थ ब्रैकेटमे स्पष्ट कयल गेल अछि। एहिसँ शब्दार्थ फूट कऽ देखयबाक आवश्यकता नहि रहल। पाठ-सुधार नीचा टिप्पणीमे देल गेल अछि, परन्तु से सुझाओ मात्र बूझल जाय।

# दू शब्द

महाकवि विद्यापतिक अनेक पद विभिन्न पोथीक रूपमे संग्रहीत अछि जे अपन-अपन विशिष्टताक कारणे लोकप्रिय अछि आ खूब बिकाइतो अछि। मैथिलीक बजारमे विद्यापतिक मांगो सभसँ बेसी अछि आ मांगक एहि बजारमे बहुतो गोटे पोथी कीनि लैत छथि, पढ़ि लैत छथि मुदा ओकर सुच्चा भावार्थ नहि बूझि पबैत छथि। खास कऽ विद्यार्थी वर्ग तँ एहिमे सभसँ बेसी पछुआयल छथि।

आब जखन कि मैथिली संघ लोक सेवा आयोग आ बिहार लोकसेवा आयोगमे शामिल भऽ गेल अछि तँ विद्यापतिक बाजार-भाव आर बेसी बढ़ि गेलनि अछि। संघ लोकसेवा आयोग **विद्यापति गीत-शती** आ बिहार लोकसेवा आयोग **विद्यापति गीतावली** पाठ्यक्रममे शामिल कयलक अछि।

विद्यापतिक गीत अथवा पदक जहाँ धरि प्रश्न अछि तँ ओ खांटी मैथिलीमे रचित अछि मुदा जे कि ताहि समयक मैथिली आजुक मैथिलीसँ शब्द-विन्यासक कारणें किछु कठिनाह अछि तें विद्यार्थी लोकनिकें ओकर अर्थ बुझबामे कठिनता भऽ रहल छनि। प्रतियोगिता परीक्षामे बैसिनिहार अभ्यर्थी लोकनि बेर-बेर ई अनुरोध कऽ रहल छथि जे विद्यापतिक ओहि पद सभक अर्थकें बुझबा लेल ओकर अर्थ युक्त टीका प्रकाशित कयल जाय जाहिसँ कि ओ लोकनि अध्ययन क्रममे लाभ उठा सकथि।

एहि पोथीमे हुनके लोकनिक अनुरोधें संघलोक सेवा आयोगमे प्रस्तावित विद्यापतिक गीतकें अर्थ सहित प्रस्तुत कयल गेल अछि। एहिठाम ध्यान देबाक विषय ई अछि जे गीतशतीमे भेल प्रूफजन्य अशुद्धिकें पाठसुधारक रूपमे परिवर्तन कयल गेल अछि जाहिसँ कि विभिन्न स्रोतसँ प्राप्त विद्यापतिक गीतकें अविकल प्रस्तुत कयल जा सकय।

एहि काजमे जे विद्वानलोकनि अपन सहयोग देलनि तनिका प्रति हम हृदयसँ आभार प्रकट करैत छियनि।

3 नवम्बर, 2007
'शेखर' जयन्ती समारोह

— प्रकाशक



महाकवि विद्यापति

# ॥ एक ॥

2010

अगमने प्रेम गमने कुल जाएत
चिन्ता पङ्क लागलि करिनी
मञे अबला दह दिस भमि झाखञो
जानि व्याध डरे भीरु हरिनी ॥ ध्रु०॥
चन्दा दुरजन गमन विरोधी
उगल गगन भरि नरवत वैरि मोरा
के पहु आन परबोधी ॥
कुहू भरमे पथ पद आरोपल
आए तुलाएल पञ्चदशी
हरि अभिसार मार उदबेजक
कञोने निबारब कुमत ससी ॥
भनइ विद्यापति इत्यादि ॥

**अर्थ** : अभिसार-गीत। प्रेमीसँ मिलन हेतु प्रेमिकाक गमन अभिसार कहबैत अछि। राधा कृष्णसँ भेंट करय जाइत मनमे सोचैत छथि :

जँ नहि जाइत छी तँ प्रेम बुड़त; जँ जाइत छी तँ कुल बुड़त – एहि चिन्ता (असमंजस) रूपी पाँकमे फँसि गेलि ई करिणी (हथिनी)। हम अबला (दुर्बलहृदया) छी। घूमि-घूमि चारू दिस तकैत छी ओहिना जेना व्याधक डरेँ त्रस्त हरिणी। ई दुष्ट चन्द्रमा गमन (अभिसार)मे विघ्न भऽ गेल। देखू ने, कोना उगि आयल आ अकास भरि पसरि गेल। हम नहि जाय सकब तँ पहु (प्रियतम कृष्ण)केँ परबोधि (बौंसिकेँ)के आनि देत? अमावस्याक अन्हरिआ राति थिक एहि भ्रमेँ अभिसार हेतु बाट पर डेग देल, परन्तु, हाय रे अभाग! ई तँ पञ्चदशी (पूर्णिमा) आबि तुलायल। एक तँ अभिसार कयल कृष्ण-सन प्रेमी उदेसेँ, ताहिपर कामदेव चित्तकेँ उद्विग्न कऽ रहल छथि। मुदा एहि कुमत (दुर्बुद्धि) चन्द्रमाके के रोकत ? विद्यापति कहैत छथि........।

स्रोत- नेपाल तालपत्र, गीत सं.-23

पाठ सुधार – विरोधक नहि, विरोधी । बैरि मोरा नहि, भेल बैरि मोर के पहुआन परबोधी । भार नहि मार । कुगत नहि, कुमत ।

## ॥ दू ॥

अनुखन माधव माधव सुमिरिते ।
सुन्दरि भेलि मधाई ।
ओ निज भाव सोभावहि विसरल ।
आपन गुन लुबुधाई ॥
माधव, अपरूब तोहर सिनेह ।
आपने विरहे अपन तनु जर-जर हे ।
जिबइते भेल सन्देह ॥
भोरहि सहचरि कातर दिठि हेरि
छल छल लोचन पानि ।
अनुखन राधा राधा रटइत
आधा आधा कहु बानि ॥
राधा सओ जब पुनतेहि माधव
माधव सओ जब राधा ।
दारुन पेम तबहु नहि टूटत
बाढ़त विरहक बाधा ॥
दुहु दिशे दारुदहन जैसे दगधइ
आकुल कीट परान ।
ऐसन बल्लभ हेरि सुधामुखि
कवि विद्यापति भान ॥

**अर्थ :** [ ई गीत बंगालक वैष्णव स्रोतसँ आयल अछि तेँ एकर भाषा व्रजबुली सन भऽ गेल छल। मैथिल विद्वानलोकनि एकरा मैथिली रंग देबाक प्रयास कयलनि, तथापि किछु बदरंग लगितहिँ अछि। अत: एकर भाषा दिस नहि, भाव दिस ध्यान देल जाय। ]

एहि गीतमे राधाक प्रेम-वैचित्र्य वा महाभाव देखाओल गेल अछि। वैष्णव परम्परामे महाभाव ओ अवस्था थिक जखन केओ प्रेमातिशयवश अपनाकेँ अपन प्रेमी बूझि अपने विरहसँ अपनहि व्याकुल भऽ जाइत अछि।

(1) सुन्दरी राधा सतत् माधवक स्मरण करैत-करैत स्वयम् माधव (कृष्ण) भऽ गेलीह (प्रेमक उद्रेकसँ अपनहिमे कृष्णक भ्रम भऽ गेलनि। ओ अपन अस्तित्व आ स्वभाव (नारी थिकहुँ से बात) बिसरि अपने गुण पर (प्रीति, रूप आदिक विलक्षणता पर मोहित भऽ गेलीह)। (2) हे कृष्ण, अहाँक प्रेम अपूर्व (अवर्णनीय) अछि। बेचारी राधाक (महाभाव दशामे) अपने विरहसँ अपन शरीर जर्जर भऽ गेलनि। प्राण बचतनि ताहूमे सन्देह। (3) भोर (हतबुद्धि) भेलि कातर दृष्टिसँ सखीक मुह तकैत छथि। आँखिमे नोर डबकल छनि। निरन्तर राधा-राधा रटैत-रटैत आब ओ शब्द पूरा नहि, 'राधा'क स्थान 'आधा' सुनाइत अछि। (4) ततबे नहि, जखन ई बोध घुरि अबैत छनि जे हम कृष्ण नहि, राधा थिकहुँ, तखनहु ओहि विरहक अन्त नहि। अपना केँ राधा बुझलनि तँ कृष्णक विरह, आ कृष्ण बुझलनि तँ राधाक विरह बढ़ले जाइत। (5) मानू एक काठमे घुन अछि आ ओहि काठक दूनू ओरमे आगि लागि गेल छैक। एम्हर जाए तैओ ज्वाला, ओम्हर जायब तैओ। राधाक प्राण ओही कीट जकाँ आकुल अछि।

स्रोत- नगेन्द्रनाथ गुप्त, 791

## ।। तीन ।।

(1) अपनेहि पेमक तरुअर बाढ़ल
कारन किछु नहि भेला।
साखा पल्लव कुसुमे बेआपल
सौरभ दह दिस गेला ।।ध्रु०।।

(2) सखि हे दुरजन दुरनए पाए।
मूरा जञो मूकहि सञो भाङ्गल
अपदहिँ गेल सुखाए ।।

(3) कुलक धरम पहिलेहि अकिआतल
कञोने देब पलटाए।
चोर जननि जञो मने मने झाखञो
राओ वदन झपाए ।।

(4) अइसना देह गेह न सोहाबए
बाहर वम जनि आगि।
विद्यापति कह अपनेहि आओत
सिरि सिवसिंह रस लागि।।



अर्थ : विरह-गीत। विरहिणी राधा अपन व्यथा सखीसँ सुनबैत छथि:

(1) हे सखी, प्रेमक तरुवर अपनहि (अनायास) जनमल आ बढ़ैत गेल। एहन कारण तँ किछु नहि भेल जाहिसँ एना प्रेम भऽ जाय। ओहि तरुक डारि-डारि, पात-पात फूलसँ व्याप्त भऽ गेल। (2) परन्तु हे सखी, की कहु; दुर्जन्न सभक दुर्नय (कुचलि, चुगलपनी)सँ मूर जकाँ जड़िअहि (मूलहि)सँ टूटि गेल आओर बिनु कोनो अवसरहि (अपदहि) सुखा गेल। (3) कुलक धर्म (प्रतिष्ठा)केँ तँ पहिनहि अरिआति (बिदा कऽ) देल। आब तकरा के घुरा आनत (कुलधर्मो गेल आ प्रीति सेहो गेल।) मनहि मन (चुपेचाप)झँखैत रहैत छी आ मुह झाँपि कनैत रहैत छी-ओहिना जेना चोरक माय (लोक कानब सुनतैक तँ चोरि प्रकट भऽ जयतैक ताही डरेँ। (4) एहन अवस्था मे ने देह सोहाइत अछि, ने गेह (घरमे रहब)। बाहर जाइत छी तँ लगैत अछि जेना आगि उगिलैत हो (चुगली टा सुनि पड़ैत अछि) विद्यापति कहैत छथि (सान्त्वना दैत छथि) रसलुब्ध श्री शिवसिंह अपनहि अओताह, चिन्ता नहि करू।

स्रोत- नेपाल तालपत्र, गीत 109

पाठ-सुधार-आउति नहि, आओत। आउति पाठ प्रसंगविरुद्ध अछि, किएक तँ सान्त्वना नायिकाकेँ देल जाइत छैक।

## ।। चारि ।।

(1) अविरल नयन गलए जलधार।
नव जल विन्दु सहए के पार ।।

(2) कुच दुहु उपर आननहि हेरु।
चान्द राहु डरे चढ़ल सुमेरु ।।ध्रु०।।

(3) कि कहब माधव ताहेरि कहिनी।
कहिहि न पारिअ देखलि जहिनी।।

(4) अनल अनिल बम मलअज बीख।
जे छल सीतल से भेल तीख ।।

(5) चान्द सन्ताबए सविताहु जीनि।
नहि जीवन एकमत भेल तीनि ।।

(6) किछु उपचार न मानए आन।
एहि बेआधि भेखज पचवान।।

(7) तुअ दरसन बिनु तिलाओ न जीव।
जैअओ कलामति पीउख पीव ।।
भनइ विद्यापतीत्यादि-।।



**अर्थ :** विरह-वर्णन। राधाक सखी कृष्णकें विरहिणी राधाक दशा सुनबैत छथि :

(1) हे माधव, अहाँक विरहमे राधाक आँखिसँ नोरक धार लगातार गरल जा रहल छनि। पावस आबि गेल, विरहिणी नव जल बिन्दु (पावसक पहिल वर्षा) कोना सहि सकतीह। (2) वृष्टि देखि नहि पड़य तें अपन मुह झुका दुनू स्तन पर लटका लेलनि- जेना चान (राधाक मुह) राहुक (मेघक) डरें सुमेरु (स्तन) पर चढ़ल हो (3) हे माधव, हुनक (राधाक) हाल (कहिनी, गप) की कहू। हुनका जाहि अवस्थामे देखल तकर वर्णन नहि कऽ सकैत छी। (4) हुनका पवन लगैत छनि जेना आगि उगिलैत हो; चन्दन बिख बुझाइत छनि। जे-जे वस्तु शीतल लगैत छलनि से-से एखन तीख (असत्य) लगैत छनि। (5) चान सूर्यहुसँ बेसी सन्ताप दैत छनि। बूझि पड़ैत अछि, चान, चन्दन आ चन्द्र तीनू एकमत (गोलबन्द) भऽ हुनका जीबऽ नहि देतनि। (6) आनो जे कोनो उपचार छैक तकरो किछु प्रभाव नहि देखैत छी। एहि व्याधिक औषध कामदेवे भऽ सकैत छथि (किएक तँ ई रोग हुनके कयल थिक)। (7) अहाँक दर्शन जँ नहि होयतनि तँ ओ कलामती राधा लाख अमृत पीबथु, क्षणो भरि जीबि नहि सकैत छथि।

स्रोत- नेपाल तालपत्र गीत-6

**पाठ-सुधार-** सुन्दरि नहि, माधव। अधिक नहिं, भेखज।

## ॥ पांच ॥

(1) अम्बरे वदन झपावह गोरि ।
राज सुनइछिअ चान्दक चोरि ।

(2) घरे घरे पहरी गेल अछ जोहि ।
अबही दूषण लागत तोहि ॥ध्रु०॥

(3) कतए नुकाओब चान्दक चोरि ।
जतहि नुकाओब ततहि उजोरि ॥

(4) सुन सुन सुन्दरि हित उपदेश
सपनेहु जनु हो विपदक लेश ।

(5) हास सुधारस न कर उजोर
धनिक बनिके धन बोलब मोर ॥

(6) अधर समीप दसन कर जोति
सिन्दुर सीप बैसाउलि मोति ।

(7) भनहि विद्यापति होहु निसङ्क
चाँदहुँ कों किछु लागु कलङ्क॥

अर्थ : ई चाटु-गीत थिक। प्रेमी/प्रेमिकाकेँ रिझयबाक हेतु ओकर प्रशंसा, विशेष कऽ ओकर सौन्दर्यक वर्णन चाटु कहबैत अछि। कृष्ण राधाकेँ चाटु वचन सुनबैत छथि :

(1) हे गोरि-नारि राधा, अहाँ आँचरसँ अपन मुह झाँपि लिअऽ। सुनैत छी जे आइ राति चानक चोरि भऽ गेल अछि (2) प्रहरी (पुलिस) घरे-घरे जोहि (खोजि) गेल अछि। एखनहि चान चोरयबाक आरोपक अहाँपर लागि जायत (अहाँ धरा जायब)। (3) अहाँ जे ई (मुखरूपी) चान चोरा आनल तकरा कतऽ नुकायब। जतहि नुकायब ततहि इजोत भऽ जायत।

(ई भेल पहिल चाटु। आब दोसर चाटु सुनू।)

(4) हे सुन्दरी, हमर एकटा आओर हित उपदेश सुनू। उपदेश एहि हेतु दैत छी जे सपनहुमे कोनो टा संकट नहि हो। (5) अहाँ अमृत-रस (ज्ञातव्य जे अमृतक रंग श्वेत मानल जाइत अछि) सन हास कऽ इजोत नहि पसारू। धनिक बनियां सभ ओहि इजोतमे जे धन देखत से कहत जे सभटा हमरे थिक। (6) अहाँक ठोर लग दाँत सभ चमकैत अछि से लगैत अछि जेना सिन्दूर भरल सितुआमे मोति बैसाओल हो एकरहु बनियां अपन धन बूझि लेत, तेँ हँसू नहि, मुह मुनने रहू। (7) विद्यापति कहैत छथि, कोनो शंका नहि करू, निश्चिन्त रहू, पुलिसकेँ कहबैक, जाहि चानक चोरि भेल अछि से एतय नहि अछि; ओहिमे दाग छैक, ई तँ बेदाग अछि।

स्रोत- नेपाल तालपत्र, गीत 235

पाठ-सुधार- सुनइछिअ एहन क्रियापद रूप विद्यापति कालमे नहि छल। एही भावक एक आन गीतमे अनुदित पाठ अछि जनु लागओ तोहि चान्दक चोरि।

## ॥ छओ ॥

(1) अरुणे किरन कछु अम्बल देल।
दीपक सिखा मलिन भए गेल॥

(2) हठ तेज माधव जएबा देह।
राखए चाहिअ गुपुत सिनेह॥

(3) दुरजने जाएत परिजन कान।
सगर चतुरपन होएत मलान॥

(4) भमर कुसुम रमि न रह अगोरि।
केओ नहि बेकत करए निअ' चोरि॥

(5) अपनेञो धन हे धनिक धर गोए।
परक रतन परगट कर कोए॥

(6) फाव चोरि जञो चेतन चोर।
जागि जाएत पुर परिजन मोर॥

(7) भनइ विद्यापति सखि कह सार।
से जीवन जे पर उपकार॥



**अर्थ :** विलास-वर्णन। राति भरि विलासक उपरान्त राधा भोरमे कृष्णसँ छुट्टीक हेतु अनुरोध करैत छथि :

(1) अरुणदेव आकाशमे किछु किरण छिटकौलनि (भोर भऽ गेल)। दीपक जोति मलिन भऽ गेल। (2) हे माधव, हठ छोडू (केलि विलास समाप्त करू); आब हमरा जाय दिअऽ। गुप्त स्नेहक रक्षा करबाक चाही। एहन काज नहि करी जे देखार भेला पर प्रेम करब सम्भवे नहि हो। (3) जँ केओ दुर्जन हमरा अहाँक प्रेम बूझि जायत तँ ओ लगले हमर माय-बाप कान फूकय लागत आ हमरा अहाँक सभ चतुरपन घोसरि जायत। (4) भ्रमर कुसुमक संग रमण (केलिविलास) कऽ कऽ उड़ि जाइत अछि, फूलकेँ अगोरिकेँ बैसल नहि रहैत अछि। केओ अपन चोरिकेँ उघार नहि होअऽ दैत अछि। (5) धनवान् अपनो धन नुकाकेँ रखैत अछि। चोरि कऽ आनल आनक रत्न के मूर्ख प्रकट करत ? (6) चोरि तखनहि फबैत छैक जखन चोर चेतन (चतुर) हो। अहां जँ हमरा आओर बिलमायब तँ हमर घरक लोकसभ जागि जायत। (7) विद्यापति कहैत छथि हे कृष्ण, राधाक सखी ठीक कहैत छथि। से जीवन सफल जीवन थिक जे आनक उपकार करए (संकटमे फँसाबय नहि)।

स्रोत- तरौनी तालपत्र, न.गु. 25

## ।। सात ।।

(1) अरे अरे भमरा तोजे हित हमरा
बँउसि आनह गजगामिनि रे ।
आजुकि रूसलि कालि जञो बँउसवि
तीति होइति मधुजामिनि रे ।।

(2) तीति रजनिआँ तिनि जुगे जनिआँ
दिहिठुक ओत देसाँतर रे ।
सरोबर सोसे कमल असिलाएल
नगर उजकि भेल पाँतर रे ।।

(3) एकसर मनमथ दुइ जिव मारए
अपन अपन भिन बेदन रे ।
दुइ मन मेलि कमने बेकताओब
दारुन प्रथम निवेदन रे ।।

(4) मानक भञ्जन जदुकुल रञ्जन
विद्यापति कवि गाओल रे ।
लखिमा देवि पति सिबसिंह नरपति
पुरुब जनम तपेँ पाओल रे ।।



**अर्थ :** उपालम्भ-गीत। प्रेमी-प्रेमिकाक बीच कोनो पक्षसँ प्रेमक अपेक्षा भेला पर जे मनोमालिन्य, रूसब-फुलब, उलहन-उपराग, अनुनय-विनय होइत अछि से उपालम्भ कहबैत अछि। कृष्ण भ्रमरसँ अनुरोध करैत छथि जे राधाकेँ बौँसि आनह :

(1) हे भ्रमर, तोँ हमर हित थिकह। कृपा कऽ गजगामिनी राधाकेँ बौँसि आनह। तोँ आजु रूसलिकेँ काल्हि बौँसि अनबह तँ हमर वसन्तक ई राति तीत (दुखद) भऽ जायत (तेँ शीघ्रता करह)। (2) तीत राति तँ हमरा तीन युग जकाँ लागत। राधा जँ आँखिक ओटो होइत छथि तँ लगैत अछि जेना दूर देश चलि गेलि होथि। लगैत अछि जेना पोखरि सुखा गेल आ कमल मरुआ गेल हो, नगर उजड़िकेँ पाँतर (जनशून्य स्थान) भऽ गेल हो। (3) कामदेव एके बाणसँ दू प्राणीकेँ घायल करैत छथि। दूनू भिन्न-भिन्न प्रकारक व्यथासँ छटपटाइत अछि। दुनूक मनमे इच्छा होइत रहैत छैक जे मेल भऽ जाय। परन्तु प्रश्न अछि जे आगाँ के बढ़ओ। पहिने आगाँ भऽ समझौताक प्रस्ताव राखब बड़ कष्टकर होइत अछि। (5) विद्यापति कहैत छथि, लखिमा देवी, जनिकामे मान भञ्जन करबाक आ प्रसन्न करबाक गुण (कला) छनि, एहन पति राजा शिवसिंहक रूपमे पूर्वजन्मक तपस्याक बलेँ पओलनि।

**स्रोत**- तरौनी तालपत्र, न.गु. 371

## ।। आठ ।।

अलखिते हमे हेरि बिहुँसलि थोर।
जनि रयनी भेल चाँद उजोर ।।
कुटिल कटाख लाख पड़ि गेल।
मधुकरे अम्बर डम्बर देल ।।
काहिक सुन्दरि के ताहि जान।
आकुल कए गेलि हमर परान ।।
लीला कमले भमर धरु बारि।
चमकि चललि गोरि चकित निहारि ।।
तेँ भेल बेकत पयोधर सोभ।
कनय' कमल हेरि काहि न लोभ ।।
आध नुकाएल आध उदास।
कुचकुम्भे कहि गेल अपनक आस ।।
से सबे निधि दए गेलि सन्देस।
किछु नहि रखलन्हि रस परिसेस ।।
भनइ विद्यापति दुहु मन जागु।
सिम कुसुमसर काहु जनु लागु ।।

**अर्थ :** रागोदय-गीत। कृष्ण राधाक रूप-लावण्य आ हाव-भाव देखि हुनका पर अनुरक्त भऽ जाइत छथि। ओ दृश्य बेरि-बेरि हुनका मन पड़ैत छनि :

राधा अलक्षित रूपहि (अझकहि) हमरा देखि कनेक बिहुँसि देलनि; मानू रातिमे चन्द्र-किरण छिटकि गेल। लाख-लाख कुटिल कटाक्ष हमरा पर होअय लागल: मानू आकाशमे भ्रमर-मण्डली मड़रा रहल हो। जानि नहि ओ सुन्दरी के आ कोन ठामक छलीह। ओ हमर प्राणकेँ आकुल कऽ गेलीह। हुनक हाथमे लीला-कमल छल।

जेना शोभार्थ कोटमे गुलाबक फूल खोँसल जाइत अछि तहिना ताहि दिन सुन्दरी सभ हाथमे कमलक फूल लऽ चलैत छलीह; तकर नाम लीला-कमल) ओ सुन्दरी ओहि कमल पर अबैत भ्रमरकेँ भगबैत चंचल नयनसँ हमरा निहारि चमकिकेँ चलि गेलीह। एहि क्रममे (भ्रमरकेँ भगयबाक क्रममे) हुनक शोभन स्तन उघार भऽ गेल। स्वर्ण-कमल (स्तन) देखिकेँ ककरा नहि लोभ होयतैक। आधा स्तन झाँपल छल, आधा उघार। कुचकुम्भ देखा ओ अपन आशा (कामना, प्रीति करबाक इच्छा) जना गेलीह। ओ अपन सभटा दुर्लभ निधिक उपहार हमरा दऽ गेलीह। कोनो टा रस (प्रीतिभाव) बाकी नहि रखलनि। विद्यापति कहैत छथि, दुनूक मनमे प्रेमभाव जागल। काम-बाण ककरहु नहि लगैक।

स्रोत- तरौनी तालपत्र, न.गु. 49

पाठ-सुधार- रयनि नहि, रजनी। लाट नहि, लाख।

## ।। नओ ।।

अलसे अरुण लोचन तोर
अमिञे मातल जनु चकोर
निचल भौंह ले बिसराम
रन जिनि धनु तेजल काम ।।धु०।।
ए रे राधे न कर लथा।
उकुति बेकत गुपुत कथा
कुच सिरीफल सहज सिरी।
केसु विकशित कनक गिरी ।।
तिलक बहल उधसु केस
हसि पलिछल कामे सन्देश ।।
भनइ विद्यापतीत्यादि ।।



**अर्थ :** रति-वर्णन। गीत 8क प्रस्तावना देखू। सखी-राधासँ कहैत छथि :

हे सखी, तोहर अलसायल-सन ललोन (रक्ताभ) आँखि लगैत छहु जेना (मुखचन्द्रक) अमृत पीबि मातल चकोर हो। भौंह निश्चल भऽ विश्राम कऽ रहल छहु, जेना युद्धमे विजय पाबि कामदेव धनुष नेड़ा देने होथि। हे राधा, लाथ (बहाना) नहि करह।

तोहर अपने उक्तिसँ गुप्त बात (रातिमे कयल सम्भोग) व्यक्त भऽ गेलहु। तोहर सहज-सुन्दर बेल सन पुष्ट स्तन देखि लगैत अछि जेना स्वर्ण-पर्वत पर पलास फुलायल हो अर्थात् तोहर स्तन पर नखक्षत छहु। पसाहिन मेटायल छहु आ केस उधसल (अस्तव्यस्त) छहु। मानू कामदेव हँसिकेँ सन्देशक परीक्षण कयलनि (?) (अन्तिम पाँतीक भाव स्पष्ट नहि होइत अछि।)

स्रोत- नेपाल तालपत्र गीत 112

पाठ-सुधार- चान्द नहि, जनु। भौंहन नहि, भउँह। गुपत बेकत नहि, बेकत गुपुत।

## ।। दस ।।

आकुल चिकुरे बेढ़ल मुख सोभ ।
राहुल कएल ससिमण्डल लोभ ।।
उभरल चिकुर माल धर रङ्ग ।
जनि जमुना मिल गाङ्ग तरङ्ग ।। ध्रु०।।

बड़ अपरुब दुहु चेतन मेलि ।
विपरित रति कामिनि कर केलि ।।
वदन सोहाओन सम जलविन्दु ।
मदने मोति दए पूजल इन्दु ।।

पिआ मुख सुमुखि चुम्ब तेजि ओज ।
चान्द अधोमुख पिबए सरोज ।।
कुच विपरीत विलम्बित हार ।
कनक कलस जनि दूधक धार ।।

किङ्किनि रनित नितम्बहि छाज ।
मदन महासिधि बाजन बाज ।।
भनहि विद्यापति मने अनुमानि ।
कामिनि रम पिआ अनुमत जानि ।।

**अर्थ :** विपरीत-रतिक वर्णन कविक मुहेँ।

फूजिकेँ छिड़िआयल केससँ बेढ़ल (आवृत) मुख शोभा पाबि रहल अछि। जेना राहु शशिमंडलक (अमृतक) लोभेँ चानपर उतरि आयल हो। छिड़िआयल केस पर फूलक माला एहन रंग धरैत अछि जेना यमुनाक धारा गंगाक तरंगक संग बहैत हो। दुनू चेतन (प्रौढ़) नायक-नायिकाक मिलन (रति) बड़ अपूर्व (असाधारण) अछि, किंएक तँ कामिनी (कामुक नायिका) अपनहि आगू भऽ विपरीत रतिक केलि (यौन विलास) करैत अछि। रति-श्रमसँ छूटल घामक ठोप सभ मुहक शोभा बढ़बैत अछि, जेना कामदेव मोतिसँ चानक पूजा कयने होथि। कामिनी संकोच (ओज) त्यागि प्रेमीक मुह चुमैत अछि, जेना चान मूड़ी निहुड़ाय कमलक रस चूसैत हो। स्तन परसँ हार उनटा दिस (नीचाँ दिस) लटकल अछि; जेना सोनाक कलशसँ दूधक धार ढराइत हो। डाँड़ पर घुँघरू रूनझुन ध्वनि करैत अछि, जेना कामदेव कोनो महासिद्धि (असाधारण विजय) पओने होथि आ तकर उत्सवमे बाजा बजैत हो। विद्यापति मनमे अनुमान कऽ कहैत छथि, कामिनीक एहि विपरीत रतिमे नायकोक अनुमति छल होयत।

स्रोत- नेपाल तालपत्र, गीत 98

पाठ-सुधार- कर नहि, धर ।

## ।। एगारह ।।

आज पुनिमा तिथि जानि मोजे ऐलिहुँ
उचित तोहर अभिसार।
देह जोति ससि किरन समाइति
के विभिनाबए पार ।। ध्रु०।।

सुन्दरि अपनहुं हलह बिचारि
तोहें जनु तिमिर हीत कए मानह
आनन तोर तिमिरारि ।।

सहज विरोध दूरें परिहरि धनि
चल उठि जतए मुरारि ।।
दूती वचन हीत कए मानल
चालक भेल पचवान।
हरि अभिसार चलिलि वर कामिनि
विद्यापति कवि भान ।।



अर्थ : अभिसार-वर्णन। शुक्लाभिसारिका। सखी राधासँ कहैत छथि :

आइ पूर्णिमा तिथि थिक से जानि हम ई कहय आयलि छी जे आइ तोहर अभिसार उचित (सुविधाजनक) होयतहु। तोहर देहक जोति चानक किरण मे तेना समा जायत जे केओ बिभिनाय नहि सकत (चन्द्र किरण आ कामिनी दूनूकेँ फुटा जानि नहि सकत)। हे सुन्दरी, तोँ अपनहु मनमे बिचारि लैह। तोँ अन्धकारकेँ अपन हित (अनुकूल) नहि मानह, किएक तँ तोहर मुह अन्धकारक शत्रु थिक। हे धनि, विरोध (खटपट) तँ प्रेमी-प्रेमिकाक बीच सहज (स्वाभाविक) थिक, तकरा दूरहि छाडि, उठह; चलह। कवि विद्यापति कहैत छथि, राधा दूतीक एहि उपदेशकेँ हितकर बुझलनि। कामदेव चालक (प्रेरक, ड्राइभर) भेलथिन। कामिनी हरिक उदेसेँ अभिसारमे चललीह।

स्रोत- रागतरंगिणी, पृ. 76

पाठ-सुधार- हृदय विचार नहि, हलह विचारि।

## ।। बारह ।।

(1) आजु मञे हरि समागम जाएव
कत मनोरथ भेल।
घर गुरूजन नीन्द निरुपैते
चन्दाञे उदय देल ।। ध्रु०।।

(2) चन्दा कठिन तोहरि रीति।
जेहि मति तोहि कलङ्क लागल
तैअओ न मानसि भीति।।

(3) जगत नागरि मुह जिनइते
गेलाहे गगन हारि।
ततहु राहु गरास पड़लाह
देव तोहि कोन गारि ।।

(4) एके मासे तोहिं बिहि सिरजए
कतंन जतन बले।
दोसर दिना रहए न पारह
तही पापक फले ।।

(5) भन विद्यापति सुन तोञे जुवति
चाँदक न कर साति।
दिना सोड़ह चाँदक आइति
ताहिपर भलि राति ।।

**अर्थ :** अभिसार-गीत। नायिका अभिसारमे उपस्थित अपन कठिनताक बयान मनहि मन करैत अछि :

(1) बड़ मनोरथ गेल जे आइ हम कृष्णसँ भेंट करय जायब। किन्तु हा दैव; जा बाट ताकी जे घरक लोक (गुरुजन) नीन पड़ए ता' चान उगि गेल। (2) हे चान, तोहर चालि (रीति) बड़ कष्टदायक (कठिन) छहु। एहन (दुष्ट) मति छहु तेँ ने कलंक (दाग) लगलहु। मुदा तैयो (ओहू कलंक) तोरा डर नहि भेलहु। (3)तोँ संसार भरिक सभ नारीक मुह जितबाक साहस कयलह आ हारिकेँ अकासमे पड़ाय पड़लहु। मुदा ततहु त्राण नहि, राहुक ग्रासमे पड़ि गेलह। तोरा कतेक गारि दिअहु। (4) विधाता एक मास खटि कतेक प्रयासेँ तोरा सिरजैत छथुन, मुदा ओही पापक परिणाम थिकहु जे तोँ दोसरे दिन टिकि नहि पबैत छह। (5) विद्यापति कहैत छथि, हे युवती, सुनह। चानक एना भर्त्सना (साति) नहि करहुन। चानक हाथमे (वशमे) केवल चौदह दिन छनि, तकरा बाद तँ नीक (अन्हार गुज्ज) राति भेटबे करतहु।

स्रोत- नेपाल

## ॥ तरह ॥

(1) आनन लोनुअ बचन बोलए हँसि ।
अमिअ बरिस जनि सरद पुनिमा ससि ॥ ध्रु०॥

(2) अपरुव रूप रमनिआ ।
जाइते देखलि गजराज गमनिआ ॥

(3) काजरे रञ्जित धवल नयनवर ।
भमर मिलल जनि अरुन कमलदल ॥

(4) भान भेल मोहि माझ खीनि धनि ।
कुच सिरिफल भरेँ भाँगि जाइति जनि ॥

(5) कविशेखर भन अपरूव रूप देखि ।
राए नसरद साह भजलि कमलमुखि ॥



**अर्थ :** रागोदय। नायिकाकेँ देखि नायक ओकरा पर मुग्ध होइत छथि आ ओ घटना मन पड़ैत छनि :

(1) मुह बड़ सोहाओन रहैक। बिहुँसिकेँ बाजय, जेना शरद पूर्णिमाक चान अमृत वृष्टि करैत हो। (2) ओहि रमणीक रूप अपूर्व रहय। ओहि रमणीकेँ जाइत देखल, जे गजराज जकाँ झूमैत चलैत रहय। (3) ओकर सुन्दर-सुन्दर दूनू आँखि कजराओल रहय, जेना लाल कमलक पत्ती पर भओँरा बैसल हो। (4) ओकर डाँड़ ततेक पातर छलैक जे हमरा बुझायल, बेल-सन पुष्ट स्तनक भारसँ कहूँ टूटि ने जाइक। (5) कविशेखर विद्यापति कहैत छथि, राय नसरुद्दीन शाह एहने अपूर्व रूप देखि कमलमुखी प्रणयिनी पओलनि।

स्रोत- रागतरंगिणी

## ॥ चौदह ॥

(1) आसक लता लगाओल सजनी
नएनक नीर पटाय ।
से फले अब तरुनत भेल सजनी
आँचर तर न समाय ॥

(2) काँच साँच पहु देखि गेल सजनी
तसु मन भेल कुहु भान ॥
दिन दिन फल तरुनत भेल सजनी
अइसन न करु गेयान ॥

(3) समरेक पहु परदेस बसि सजनी
आएल सुमिरि सिनेह ।
हमर एहन पहु निरदय सजनी
नहि मन बाढ़ए नेह ॥

(4) भनहिं विद्यापति गाओल सजनी
उचित आओत गुनसाह ।

(5) उठि बधाव करु मन भरि सजनी
आज आओत घर नाह ॥



**अर्थ :** विरह-गीत। सरल आधुनिक भाषा। लोक मध्य बड़ प्रचलित। विद्यापतिक अन्य प्रामाणिक गीत सभसँ मेल नहि। विरहिणी सखीसँ अपन विरह-वेदना सुनबैत छथि।

(1) हे सजनी, आसक लता रोपल आ तकरा आँखिक नोरसँ पटबैत रहलहुँ। ओहि लताक फल आब परिणत भऽ गेल (पूरा जोआ गेल)। आँचर तर समाइत नहि अछि। (नव यौवना रही तखनहि प्रेम कयल, प्रेमी परदेस गेलाह, आब पूर्ण-यौवना भऽ गेलहुँ, तैओ प्रिय नहि अयलाह।)

(2) पिया काँच-साँच अवस्थामे देखि गेल तेँ ओकर मन भरलैक नहि (अमावस्या, यौवनक अविकसित अवस्था, बुझयलैक)। (3) हे सखी, सभक पहु परदेस जा स्नेह मन पड़लापर घर घुरि आयल, मुदा हमर पहु एहन चंठ भऽ गेल जे ओकर मनमे प्रेमक बाढ़ि नहि अयलैक। (4) विद्यापति कहैत छथि, हे सजनी, अहाँक गुणग्राही पहु उचित समय पर अओताह। उठू, मनमे उल्लास भरू अहाँक पहु आइये घर आबि रहल छथि।

स्रोत- ग्रिअर्सन

## ॥ पन्द्रह ॥

(1) आसाओे मन्दिर बैसि निसि गमावए
सुखे न सूत सयान।
जखने जतने जाहि निहारए
ताहि ताहि तुअ भान॥

(2) वन उपवन कुञ्ज कुटीरहि
सबहि ताहि निरूप।
ताहि बिनु पुनु पुनु मुरुछए
अइसन पेम सरूप॥ ध्रु०॥

(3) मालति सफल जीवन तोर
तोहरे विरहे भुवन भमए
भेल मधुकर भोर॥

(4) जातकि केतकि कत न अछए
सबहि रस समान
सपनहु नहि काहु निहारए
मधु कि करत पान॥

(5) जकर हृदय जतए रतल
से धसि ततहि जाए।
जैअओ जतने बान्धि निरोधिअ
निमन नीर थिराए॥

(6) ई रस राए सिवसिंह जानए
कवि विद्यापति भान।
रानी लखिमा देवि वल्लभ
सकल गुन निधान॥

अर्थ : प्रीतिवर्णन। कवि अन्योक्ति द्वारा (नायिकाकेँ मालती लता बना) नायिकाक प्रति नायकक अनन्य प्रेमक वर्णन करैत छथि :

(1) हे मालती, तोहर प्रेमी भ्रमर मिलनक आशामे घरमे बैसि राति बिता दैत अछि, सेज पर सुखसँ सूतैत नहि अछि। जखन-जखन जकरा-जकरा यत्नपूर्वक निहारैत अछि ताहि-ताहिमे ओकरा तोरे भान होइत छैक। (2) तोहर विरहमे ओ बेरि-बेरि मूर्छित होइत अछि। एहन सत्य (प्रगाढ़) छैक ओकर प्रेम। (3) हे मालती, सफल छहु तोहर जीवन जे भ्रमर तोहर विरहमे व्याकुल (भोर बेसुधि) भऽ रने-बने बौआयल फिरैत अछि। (4) जातकी, केतकी कतेक ने फूल अछि। सभ फूलमे समाने रस छैक। तैओ भ्रमर सपनहुमे ओकरा सभक दिस नहि तकैत अछि, मधु-पान करबाक कथे कोन। (5) जकर हृदय जकरहि पर अनुरक्त भऽ जाइत छैक, से विवश भऽ ततहि दौड़ैत अछि। कतबो यत्न कऽ पानिकेँ बान्हब-छेकब, ओ अपन गन्तव्य निम्न स्थानहिमे जा थीर होयत। (6) कवि विद्यापति कहैत छथि, ई रस रानी लखिमा देवीक प्रेमी सकल गुणक खजाना राजा शिवसिंह जनैत छथि।

पाठ-सुधार- बैसि हटउ। तोर नहि, तोहि। अछ नहि, अछए। कुसुम नहि, सबहि। रहल नहि, रतल। घसिपए नहि, से घसि। समाए नहि, थिराए। स्रोत- नेपाल तालपत्र, गीत 18

## ।। सोलह ।।

(1) डगमग जग भम काहु न कुसुम रम
परिमल कर परिहार ।
जकरि जतए रीति तेहि बिनु नहि थिति
नेह न विषय विचार ॥ ध्रु०॥

(2) मालति तोहि बिनु भमर सदन्द
बहुत कुसुम बन सबहि विरत मन
कतहु न पिब मकरन्द ॥

(3) विमल कम[illegible] मधु [illegible] सरिस विधु
नेह न मधुप बिचार
हृदय सरिस जन न देषिअ जति खन
तति खन सयर अन्धार ॥

भने विद्यापतीत्यादि....



**अर्थ :** प्रीति-वर्णन। अन्योक्ति। नायिकाकें मालती आ नायककें भ्रमर बना कवि मालतीक प्रति भ्रमरक प्रीतिक वर्णन करैत मालतीकें कहैत छथि :

(1) हे मालती, तोहर प्रेमी भ्रमर बाट-कुबाट (डगमग, उन्मार्ग) जग भरि बौआ रहल अछि। कोनहु (आन) फूलमे मन नहि रमैत छैक, ओकर सौरभसँ दूरे रहैत अछि। जे जकरा सँ रिवल रहैत अछि, से ओकरा बिना कतहु स्थिर नहि भऽ सकैत अछि। प्रेम ई नहि देखैत अछि जे पात्र केहन अछि, कतेक गुणवान् अछि। (2) हे मालती, तोहरा बिना भ्रमर चिन्तामे पड़ल अछि। वनमे बहुत प्रकारक फूल अछि, परन्तु ओकर मन आन सभ फूलसँ विरत छैक; ओ अन्यत्र कतहु पुष्परस नहि पिबैत अछि। (3) कमल मधु निर्मल आ अमृत-समान अछि। (किछु शब्द समस्यामूलक अछि) परन्तु भ्रमरकें ताहिसँ कोनो स्नेह नहि छैक (पुन: बिदार शब्द समस्यामूलक अछि)। जाधरि अपन हृदयक अनुकूल व्यक्ति नहि देखाय ताधरि सगरो अन्हार बुझू।

स्रोत- नेपाल तालपत्र, गीत 47

पाठ-सुधार- डगमल नहि, डगमग। ते बिनु नहि, तेहि बिनु।

## ॥ सत्रह ॥

मालवरागे

(1) उठ उठ माधव कि सुतसि मन्द ।
गहन लागु देख पुनिमक चन्द ॥
(2) हार रोमावलि जमुना गङ्ग ।
त्रिबलि तरङ्गिनि विप्र अनङ्ग ॥
(3) सिन्दुर तिलक तरनि सम भास ।
धूसर मुखससि नहि परगास ॥
(4) अइसन समय पुजह पचवान ।
होअ उगरास देह रतिदान ॥
(5) पिक मधुकर पुर कहइते बूल ।
अलपेओ अवसर दान अतूल ॥
(6) विद्यापति कवि एहो रस भान ।
राए सिबसिंह सब रसक निधान ॥



अर्थ : रति-रंग। नायक सूतल छथि। नायिकाक सखी हुनका जगा नायिका लग पठयबाक प्रयास करैत छथि।

(1) हे माधव, उठह-उठह। एना अलसायल की सूतल छह। देखह पूर्णिमाक चानमे गहन लागि गेल अछि (राधा विकल अछि)। (2) ओकर हार गंगा थिक, ओकर रोमावली यमुना, तथा ओकर त्रिवली सरस्वती नदी थिक। (3) ओकर माथक सिन्दूर-बिन्दु सूर्य थिक। मुखरूपी चन्द्रमा धूसर (मलिन) भऽ गेल अछि, ओहिमे प्रकाश नहि रहलैक (नायिका उदास अछि)। (4) एहन पुण्यकालमे (ग्रहण-कालमे) कामदेवक पूजा करह। उगरास (उद्ग्रास, राहुक ग्राससँ मुक्ति) होअओ। रतिदान (नायिकासँ सम्भोग) करह। (5) देखह, कोकिल आ भ्रमर गाम-गाममे ई कहैत घूमि रहल अछि जे अवसरमे (ग्रहणजन्य पुण्यकालमे नायिका जखन सम्भोग लेल व्याकुल रहय तखन) अल्पो दान (थोड़बो कालक संगम) अतुलनीय होइत अछि। (6) ई सरस गीत विद्यापति रचल। राजा शिवसिंह सभ रसक भंडार छथि, एहू गीतक रस बुझताह।

स्रोत- तरौनी तालपत्र, गीत 234

## ॥ अठारह ॥

(1) कओने वर आनल तपसिआ।
गौरि मुगुधि भेलि देखि रंगरसिआ॥

(2) नयन अनल काजर कहाँ लाओब।
जटा गांग गोह कैसे कए चुंबाओब॥

(3) भूत वरिआती कतए जेमाओव।
पाँच यदन महुअक कहाँ पाओब॥

(4) पानि पिनाक मुसरेँ सरेँ गावए।
बाघछाल ओढ़न किछु न सोहावए॥

(5) भनइ विद्यापति ओ वरदायक।
देथु अभय वर ओ जुगनायक॥



महादेवक विवाहक कालक विडम्बनाक वर्णन नचारीक रूपमे।

**अर्थ :** गौरी तँ एही रंगरसिया (1) के एहन तपसिया वरकेँ उठा अनलक? अएँ, ई की भेल! पर रीझि गेलीह। (2) आँखिमे आगि बरैत छनि, तखन काज कतय करबनि? (3) जटा बीचक गंगामे गोहि छनि, तखन चुमाओन कोना करबनि? (4) भूत-परेत सभ बरिआती आयल अछि तकरा भोजन कतऽ करायब? वरकेँ पाँच टा मुह छनि तखन महुअक कोन मुहमे करायब? (4) हाथमे पिनाक (धनुष) छनि, वैह अठोङरक मुसरक स्वरमे स्वर मिला गबैत अछि। बाघ छाल ओढ़ने छथि, से एकोरती नहि सोहाइत अछि। विद्यापतिक कहैत छथि- ओ औढरदानी थिकाह, ओ युगनायक (?) थिकाह। अभय वर देथु।

स्रोत- भाषा गीत संग्रह, गीत - 67

## ॥ उनैस ॥

(1) कतन वेदन मोहि देसि मदना ।
हर नहि बाला मोञे जुवतिजना ॥

(2) नहि मोहि जटाजूट चिकुरक वेनी ।
सिर सुरसरि नहि कसुमक सेनी ॥

(3) चाँद तिलक मोहि नहि इन्दु छोटा ।
ललाट पावक नहि सिन्दुरक फोटा ॥

(4) कण्ठ गरल नहि मृगमद चारु ।
फनिपति मोरा नहि मुकुताहारु ॥

(5) भनइ विद्यापति सुन देव कामा ।
एक दोस अछ ओहि नामक वामा ॥



**अर्थ :** शिव-गीत, किन्तु प्रधान अछि काव्य-कौतुक। एहिमे एक सुन्दरीक वर्णन शिव रूपमे कयल गेल अछि। सुन्दरी कहैत अछि, हमरामे शिवक भ्रम नहि करू :

हे मदन (कामदेव), तों हमरा कतेक वेदना दैत छह। हम हर (महादेव) नहि, एक जन बाला युवती थिकहुँ। (2) हमर माथ पर ई जटाजूट नहि थिक, ई थिक केसक जुट्टी (वेणी)। माथ पर ई सुरसरि गङ्गा नहि थिकीह, ई थिक खोपामे बान्हल फूलक माला। (3) ई अर्धचन्द्र नहि, चन्दन-तिलक थिक। कपार पर ई (तेसर आँखिक) आगि नहि थिक, ई थिक सिन्दूर-बिन्दु। (4) कण्ठमे ई विष नहि थिक, ई थिक मृगमद (कस्तूरी)क लेप। ई साप नहि, मोतिक हार थिक। (5) विद्यापति कहैत छथि, हे कामदेव, सुनू। ओहि सुन्दरीक दोष एकेटा छैक जे ओकरहु लोक वामा कहैत छैक (जे शिवक नाम वामदेवसँ मिलैत अछि)।

स्रोत- रागतरंगिणी, पृष्ठ-70-71

## ।। बीस ।।

(1) कवरी भये चामरि गिरि कन्दरे
मुख भये चान्द अकासे।
हरिनि नयन भये सर भये कोकिल
गति-भये गज वनवासे ।।

(2) सुन्दरि ? काहे तोहेँ सम्भासि न जासि।
तुअ डरे इह सबे दूरहि पलाएल
तोहेँ पुन काहि डरासि ।।

(3) कुच भये कमल कोरक जले मुदि रहु
घट परवेस हुतासे।
दाड़िम सिरिफल गगने वास करु
सम्भु गरल करु ग्रासे ।।

(4) भुज भये कनक मृणाल पङ्के रहु
कर भये किसलय काँपे।
विद्यापति कह कत कत ऐसन
कहव मदन परतापे।



**अर्थ :** चाटु-गीत। नायक मधुर वचनसँ नायिकाकेँ रिझयबाक प्रयास करैत अछि : (1) हे सुन्दरी, तोहर कबरीक (केश राशिक) डरेँ चमरी मृग (ओ हरिण जकर पुच्छक केशसँ चँओर बनैत अछि) पर्वत कन्दरामे जा नुकायल अर्थात् तोहर केशपाश अनुपम छहु। तोहर मुहक डरेँ चान पड़ा अकासमे चल गेल। आँखिक डरे हरिणी, स्वरक डरेँ कोइली आ डेगक डरेँ हाथी वनवास लेलक। (2) हे सुन्दरी, तोहर सभ प्रतिद्वन्द्वी हारि-हारि पड़ा गेलहु, आब तोँ ककरासँ लजा हमरा लग आबि गप नहि करैत छह ? (3) तोहर स्तनक डरेँ कमलक कली जलमे मुह मुनने अछि, कलश (घैल) आगि (आबामे) पैसल, दाड़िम आ बेल आकाशवासी भेल आओर शम्भु (शिव लिंग तुलना स्तनसँ कयल जाइत अछि) विष पीलनि। (4) तोहर बाँहिक डरेँ स्वर्णकर्ण कमल-नाल पाँकमे धसल आ हाथक डरेँ किसलय (नव पल्लव) थरथर कपैत अछि। विद्यापति कहैत छथि, कामदेवक प्रताप एहन-एहन बहुत अछि, कतेक कहल जाय।

-नगेन्द्रनाथ गुप्त, गीत 118

## ॥ एकैस ॥

(1) कमलिनि एड़ि केतकि गेल हे
सौरभे रहु घूरि।
कंटके कबलु कलेवर हे
मुख माषल धूरि ॥ ध्रु०॥

(2) अवे सखि भमरा आतुर भेल हे
रति रभस सुजान ॥

(3) परिमल पुनु लोभ धाओल हे
पाओल नहि पास।
मधु पुनु डिठिहु न देषल हे
आवे जन उपहास ॥

(4) भल भेल भमि भमि आवथु हे
पावथु मन खेद।
एकरस पुरुषा न बुझह
गुन दूषण भेद ॥
भनइ विद्यापतीत्यादि।



**अर्थ :** प्रणयहानि, उपालम्भ। एक प्रेमिका पुरुषक कुचालिक उपहास भ्रमरसँ तुलना दैत करैत अछि :

(1) कमलिनीकेँ (अपन प्रियाकेँ) छोड़ि केतकी लग (दोसर स्त्री लग) गेलाह आ सौरभक लोभेँ मड़राइत रहलाह। सगर देह काँट गड़लनि आ मुह मे धूरा (केतकी फूलक गरदा) लेपा गेलनि। कुचालिक एहने फल होइत अछि। (2) आब हे सखी, (ठेस लगला पर) भ्रमर रति-रंगमे (शुद्ध प्रेम करबामे) चतुर भऽ गेल। (3) फेर एक बेर सौरभक लोभेँ ओम्हर दौड़ल तँ केतकी भिरिकेँ आबहु नहि देलकैक। मधु तँ आँखिसँ देखिओ नहि पओलक; उनटे लोक बीच उपहास टा पओलक। (4) भल भेलनि, एहिना जतय-ततयसँ घूमि-घूमि आबथु, आ मनमे विषाद पाबथु। एके रसमे लुबुधल (एके नारीमे निरत) पुरुष गुण आ दोषक अन्तर नहि जानि पबैत अछि।

स्रोत- नेपाल तालपत्र, गीत 200

## ॥ बाइस ॥

(1) करतल लीन दीन मुखचन्द।
किसलय मिलु अभिनव अरविन्द ॥

(2) अहनिसि नयने गलए जलधार।
खञ्जने उगिलल मोति-हार ॥धु०॥

(3) कि करति ससिमुखि कि पुछति आन।
बिनु अपराधेँ विमुख भेल कान्ह ॥

(4) विरहे बिखिन तनु भेल हरास।
कुसुम सुखाए रहल अछ वास ॥

(5) झखइते संसए पड़ल परान।
आबहु न उपसम कर पचवान ॥

(6) विद्यापति भन ( कवि ) कंठहार।
विरह पयोनिधि होएब पार ॥



**अर्थ :** विरह-दशा वर्णन। कविक उक्ति।

(1) विरहिणी नायिका मुखचन्द्र तरहत्थी पर रखने (विषादक मुद्रामे) अछि, से लगैत अछि जेना किसलय (नवपल्लव) हाथ पर टटका कमल राखल हो। (2) आँखिसँ निरन्तर नोर बहैत रहैक छैक, जेना खंजन मोतिक हार गिड़िकेँ उगिलैत हो। (3) चान सन मुहबाली ई विरहिणी आब कोन उपाय करत, की पूजत अनका, जखन बिनु अपराधहि कृष्ण विमुख भऽ गेलाह। (4) विरह-वेदनासँ देह दुबरा गेलैक, जेना फूल सुखा गेल आ केवल सौरभ रहि गेल हो। (5) झँखैत-झँखैत प्राण-संकट उपस्थित भऽ गेलैक। आबहु कामदेव शान्त नहि होइत छथिन कवि-कण्ठहार विद्यापति कहैत छथिन, धैर्य धरह, विरह-सागर पार होयबे करबह।

स्रोत- नेपाल तालपत्र, गीत 24

पाठ-सुधार- मोतिमहार नहि, मोतिहार। पुछसि नहि, पुछति।

## ।। तेइस ।।

(1) कह कह सुन्दरि न कर बेयाज ।
देखिअ आज अपुरब सबे साज ।।

(2) मृगमद पङ्के करसि अङ्गराग ।
कोन नागर परिनत होअ भाग ।।

(3) पुनपुन उठसि पछिम दिस हेरि ।
कखन जाएत दिन कत अछ बेरि ।।

(4) नेपुर उपर करसि कसि थीर ।
दृढ़ कय परिहसि तम सम चीर ।।

(5) उठसि बिहुसि हठि तेजिअ सार ।
तोरे मन भाव सघन अन्धकार ।।

(6) भनइ विद्यापति सुन बरनारि ।
धैरज धर मने मिलत मुरारि ।।



**अर्थ :** अभिसार-गीत। वासक सज्जा नायिका। सखी नायिकासँ कहैत अछि :

(1) हे सुन्दरी, कहह-कहह। हमरासँ लाथ नहि करह। आइ तोहर साज सिङार अपूर्व देखैत छिअहु (2) तों कस्तूरीक लेप अंगमे औंसैत छह। कोन रसिक नागरक पुण्य फलित भेलैक अछि? (3) बेरि-बेरि उठि-उठि पश्चिम दिस तकैत छह जे दिन कखन बीतत, कतेक बेर आओर बाँकी अछि। नूपुरकें उपर ससारि कसिकें थीर करैत छह (जे बाटमे ओ अवाज नहि करय)। अन्हार सन कारी चीर दृढ़ कऽ पहिरैत छह जे डेग बढ़यबामे पयर लटपटाय नहि)। (5) सहसा (हठि) गंभीरता (सार) तेजि बिहुँसि उठैत छह। तोरा मनमे गाढ़ अन्धकार प्रिय लगैत छहु। (6) विद्यापति कहैत छथि, हे सुन्नरि,. मनमे धैर्य राखू, कृष्ण भेटबे करताह ।

स्रोत- तरौनी तालपत्र, गीत 229

**पाठ-सुधार- हँसि** नहि, **हठि। मोरे** नहि, **तोर। कर** नहि, **धर।**

# ॥ चौबीस ॥

(1) कामिनी करए सनाने ।
हेरितहिँ हृदय हनए पँचवाने ॥

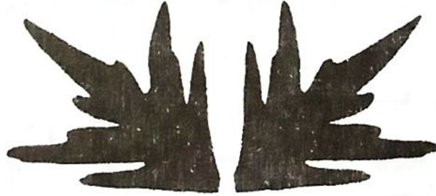
(2) चिकुर गरए जलधारा ।
मुखससि डरेँ जनि रोअए अँधारा ॥

(3) तितल वसन तनु लागू ।
मुनिहुँक मानस मनमथ जागू ॥

(4) कुचयुग चारु चकेवा ।
निञ कुल मिलत आनि कोने देवा ॥

(5) तेँ सङ्काञे भुजपासे ।
बान्धि धरिअ उड़ि जाएत अकासे ॥

(6) सुकवि विद्यापति गाबे ॥
गुनमति धनि पुनमत जन पाबे ॥



**अर्थ :** नायिकाक रूप वर्णन। सद्यः स्नाता नायिका। कविक उक्ति :

(1) कामिनी स्नान करैत अछि से देखितहि कामदेव हृदय पर चोट करैत छथि। (2) केससँ जलधारा गरैत छैक, मानू मुखरूपी चानक डरेँ अन्धकार कनैत हो। (3) तीतल कपड़ा देहमे सटल छैक, से (ताहिसँ प्रकट देह) देखि मुनि जनहुक मनमे काम-वासना जागि सकैत अछि। (4) दुनू स्तन मानू चकबा-चकबीक जोड़ा थिक; ओ उड़िकेँ अपना मंडलीमे मिलि जाय तँ फेर पकड़िकेँ आनि के देत ? (5) ताही आशंकासँ दुनू स्तनकेँ दुनू बाँहिसँ बन्हने अछि जे उड़िकेँ अकासमे नं चल जाय। (6) कविवर विद्यापति कहैत छथि, एहनि गुणवती नारी पुण्यवाने पुरुष पाबि सकैत अछि।

स्रोत- रागतरंगिणी, पृ. 73

## ॥ पचीस ॥

(1) कि आरे नव जौवन अभिरामा ।
जत देखल तत कहहि न परिअ
छओ अनुपम एक ठामा ॥

(2) हरिन इन्दु अरविन्द करणि हेम
पिक बूझब अनुमानी ।
नयन वयन परिमल गति तनु रुचि
अओ अति सुललित बानी ॥

(3) कुच जुग उपर चिकुर फुजि पसरल
ता अरुझायल हारा ।
जनि सुमेरु ऊपर मिलि ऊगल
चाँद बिहुन सबे तारा ॥

(4) ललित कपोल लेल भल कुण्डल
अधरबिम्ब धरि जाई ।
भौंह भमर नासा पुट सुन्दर
से देखि कीर लजाई ॥

(5) भनइ विद्यापति से वर नागरि
आन न पाबए कोई ।
कंसदलन नारायन सुन्दर
तसु रङ्गिनि पए होई ॥

**अर्थ :** नायिका-रूप-वर्णन। नायिका मुग्धा। वर्णन आलंकारिक। अलंकार, उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक। नायकक उक्ति :

(1) अहा, केहन अभिराम (मोहक) अछि एहि सुन्दरीक नवयौवन। जतेक देखल ततेक कहल नहि जा सकैत अछि। छओ गोट अनुपम वस्तु जानि नहि कोना, एक ठाम भऽ गेल : (2) हरिण, चान, कमल, हथिनी, सोन आओर कोकिल। पाछाँ अनुमान कऽ बूझल, अरे ई तँ थिक एहि सुन्दरीक नयन (हरिणक आँखि सन), मुख (चान-सन), सौरभ (कमल सन), चालि (हथिनी-सन), देहक रंग (सोन सन) आओर बोल (कोकिल सन)। (3) चिकुर (सम्हारिकें बान्हल केस) फुजिकें दूनू स्तन पर पसरल अछि आओर ताहिमे हार ओझराय गेल अछि से लगैत अछि जेना चानकें छोड़ि सभ तारा मिलि (एकत्र भऽ) सुमेरु पर्वत पर उगल हो। चान रहितैक तँ केस रूपी अन्धकार नहि रहितैक। (तारा=मोती, सुमेरु=स्तन, केस=अन्धकार।) (4) सुन्दर गाल पर चंचल कुण्डल अछि। ठोर (अधर) केर सुन्दरताक आगाँ बिम्बफल (तिलकोड़ाक पाकल फड़) नीचाँ जाइत अछि (?) भौंह देखि देखि भ्रमर लजाइत अछि तँ सुन्दर नाक देखि सूगा लजाइत अछि। (5) विद्यापति कहैत छथि, एहनि सुन्दरि कामिनी आन केओ नहि पावि सकैत अछि। राजा कंसदलन नारायण (कंसनारायण) जे परम रूपवान् छथि। ई तनिके रङ्गिनी (प्रेमिका, रानी) भऽ सकैत छथि।

पाठ-सुधार- ललित कपोल लोल भल कुण्डल। हिम नहि, हेम।

## ।। छब्बीस ।।

(1) की कान्हु निरेषह भौंह विभङ्ग
धनु मोहि सौंपि गेल अपन अनङ्ग ।

(2) कञ्चने कामे गढ़त कुचकुम्भ
भाँगिन हलब देइते परिरम्भ ।।धु०।।

(3) चतुर सखीजन लावथि नेह
देल पसाहि वाङ्क ससिरेह ।

(4) राहु तरास चान्द सञो आनि
अधर सुधा मनमथे धरु जानि ।।

(5) जिव जञो राखञो रहञो अगोरि
पिबि जनु हलह लागति मोरि चोरि ।

(6) कैतव करथि कलामति नारि
गुनगाहक पहु बुझथि विचारि ।।

भनइ विद्यापतीत्यादि .......



**अर्थ :** नायिकाक रूपवर्णन। रूपगर्विता नायिका। आलंकारिक। नायिका राधा अपन रूपक प्रशंसा अपनहि करैत छथि :

(1) कन्हाइ, तोँ हमर भौँ॰ - बंकिमा की निहारि रहल छह। कामदेव अपन धनुष जे हमरा सौंपि गेलाह, ई सैह थिक। (2) हमर ई स्तनरूपी कलश कामदेव सोनसँ गढ़लनि। आलिंगनमे जोरसँ दाबि एकरा भाङि नहि दैह। (3) चतुर सखी सभ......स्नेह करैत छथि, तेँ पसाहिनमे अर्धचन्द्र अंकित कऽ दैत छथि (अर्थ स्पष्ट नहि, पाठ बिगड़ल-सन) (4) राहु पीबि ने जाय ताहि डरेँ कामदेव चानसँ अमृत आनि हमरा अधरमे राखि गेलाह। (5) एकरा हम प्राण जकाँ अगोरिकेँ रखने छी। हे कन्हाइ, तोँ एकरा पीबह नहि, जँ से करबह तँ हमरा पर चोरिक आरोप लागत। (6) कलाकुशल राधा कृष्णसँ छल करैत छथि (अपन कला-कौशलसँ कल्पना-शक्तिसँ हुनका ठकैत छथि), परन्तु गुणज्ञ कृष्ण अपन बुद्धिसँ वास्तविकता बूझि जाइत छथि।

स्रोत- नेपाल तालपत्र गीत 253

पाठ-सुधार- भगइते मलब नहि, भाँगि न हलब ।

# ।। सत्ताइस ।।

(1) कुचजुग धरए कुम्भथल कान्ति
बाङ्क नखरखत आङ्कुस भान्ति ।

(2) रोमावलि हे सुण्ड अनुरूप
पानि पिअए चल नाभी कूप ।। ध्रु०।।

(3) देखह माधव कए निअँ साज
बालाँ चललि जौवन गजराज ।

(4) मदन महाउत्तेँ कएल पसाह
लीलञे नागर हेरए चाह ।।

(5) पुनु लोचनपथ सीम न आउ
सैसव राजा भीति पराउ ।

विद्यापति भन बुझ रसमन्त
राए सिवसिंह लखिमा देवि कन्त ।।



अर्थ : रूप वर्णन। वय:सन्धि। सखी कृष्णकेँ राधाक तारुण्यक वर्णन करैत कहैत अछि जे राधा नवयौवनसँ तरुणी भऽ गेलि :

(1) राधाक दुनू स्तन आब हाथीक कुम्भस्थल (माथक दुनू भागक दू मांसपिण्ड) केर शोभा पाबि गेल (पूर्ण स्थूल भऽ गेल)। स्तन पर जे नरूक्षत छैक से मानू हाथीक आँकुस थिक। (2) रोमावली (पेट परक रोइआँक धारी) मानू हाथीक सूँढ़ थिक, जे पानि पीबाक हेतु नाभि रूपी कूप दिस जाय रहल छैक। (3) हे कन्हाइ, ओ बाला (नवयौवना राधा) अपन साज-सिङार कऽ यौवनरूपी हाथी पर चढ़ि आगू बढ़लि। (4) कामदेव महाउत भेलथिन; वैह ओहि हाथीक पसाहिन कयल। रसिक नागरिक कुतुहलपूर्वक देखय चाहैत छथि एहि यौवनरूपी हाथीकेँ। (5) शैशवरूपी राजा एहि यौवनरूपी हाथीक डरेँ भागि पड़यलाह, फेर घुरिकेँ आँखिक सीमाक भीतर पैसि नहि सकैत छथि। (6) विद्यापति कहैत छथि जे एकर रस लखिमा देवीक पति रसिक राजा शिवसिंह जनैत छथि।

स्रोत- रामभद्रपुर तालपत्र, गीत 68

# ॥ अठ्ठाइस ॥

(1) कुञ्ज भवन सँ चलि भेलि रे
रोकल गिरिधारी।
एकहि नगर बसु माधव हे
जनु करु बटवारी ॥

(2) छाडु कन्हइआ मोर आँचर हे
फाटत नव सारी।
अपजस होएत जगत भरि हे
जनु करिअ उधारी ॥

(3) सङ्गक सखि अगुआइलि रे
हम एकसरि नारी।
दामिनि आय तुलाइलि हे
एक राति अन्हारी ॥

(4) भनहि विद्यापति गओल हे
सुनू गुनमति नारी।
हरिकसङ्गे किछु डर नहि हे
तोहें परम गमारी।



**अर्थ :** रंग-रभस, गोपी आ कृष्णक बीच। भाषा आ भाव दूनू परम सरल। व्याख्याक प्रयोजन नहि। किछु गोटाक मतें ई गीत विद्यापतिक नहि, कोनो आधुनिक कविक थिक।

स्रोत- ग्रिअर्सन, गीत 21

## ।। उनतीस ।।

(1) कुण्डल तिलकेँ विराज मुख सोभित सींदुर बिन्दु।
हेमलतामे समारु विधि कवि रवि तारा इन्दु ॥
हिन्दुवदनि धनि नयन विसाला
कमल कलित जनि मधुकर माला ॥
देखलि कलावति अपुरुब रमनी।
जिनए आइलि सुरपुर गजगमनी ॥

(2) बेनी विमल बिराज तसु लस कुसुमावलि हार।
स्याम भुअङ्गम देखि कहु किओ काम परहार ॥
करु परहार मदन सर बाला।
कुटिल कटाख बान कनिआरा ॥

(3) कम्बु कण्ठ मृणाल भुज बलित पयोधर भार।
कनक कलस रसे पूरि रहु सञ्चित मदन भण्डार।
मदन भण्डार पयोधर गोरा ॥
जानि उलटाओल कनय कचोरा ॥

(4) स्यामा सुलोचनि सुरति रति अपुरुव भूषन भार।
विद्यापति कविराज कह सुफले करथु अभिसार ॥
करु अभिसार मदन सर बाला
कुटिल कटरव बाण कनिआरा ॥

**अर्थ :** रूप वर्णन। आलंकारिक। कविक उक्ति।

(1) नायिकाक मुह कुण्डल, पसाहिन, सिन्दूर ठोपसँ शोभित अछि, मानू विधाता नायिका रूपी सोनक लतामे शुक्र कुण्डल), सूर्य (पसाहिन) तारा (ठोप) आ चन्द्रमा (मुह) सभकेँ एक ठाम सजओलनि। (2) चन्द्रमुखी नायिकाक बड़-बड़ गोट आँखि लगैत अछि जेना कमलक फूलपर दू टा भ्रमर बैसल हो। कलाकौशल जननिहारि अनुपम सुन्दरीकेँ देखल तँ लागल जेना गजगामिनी (हाथी पर सबार भेलि नायिका) स्वर्ग सुन्दरी सभकेँ जीतय चललि होथि। (2) नायिकाक पीठपर वेणी (केसक जूटी) शोभायमान अछि तथा गरामे फूलक हार शोभैत अछि; से लगैत अछि जेना कृष्ण सर्पकेँ देखि ओकरा मारबाक हेतु कामदेव तीर (हार) चलओने होथि। बाला (नवयौवना नायिका) कुटिल कटाक्षक बाण चलाओल। (3) नायिकाक कण्ठ मानू शंख थिक, बाहु कमलनाल थिक आओर स्तन ताहि भुजसँ घेरायल अछि, से लगैत अछि जेना कामदेव दुनू हाथेँ घैल उठा मदन-भंडार (स्तन)केँ रससँ भरैत होथि। मदन भंडार रूपी गौरवर्ण स्तन लगैत अछि जेना सोनाक कटोरा उनटाकेँ राखल हो। (4) कविराज विद्यापति कहैत छथि ई सुनयना, अनुपम भूषण सभसँ अलंकृत, रतिक समान सुन्दरी श्यामा (षोडशी, पूर्णयौवना) नायिकाक अभिसार सफल हो। मदनबाणसँ प्रेरित सुन्दरी कुटिल, कटाक्ष रूपी बाणक प्रहार करैत छथि।

स्रोत- रागतरंगिणी, पृष्ठ 69-70

## ॥ तीस ॥

(1) कुसुमबान विलास कानन
केस सिन्दर रेह ।
निबिल नीरद रुचिर दरसए
अरुण जनि निज देह ॥

(2) आज देखु गजराजगति
वरजुवति त्रिभुवन सार ।
जनि,
कामदेवक विजयवल्ली
बिहलि बिहि संसार ॥

(3) सरद ससधर सरिस सुन्दर
बदन लोचन लोल ।
विमल कञ्चन कमल चढ़ि जनि
खेलु खञ्जन जोल ॥

(4) अधर नव पल्लव मनोहर
दसन दालिम जोति ।
जनि,
विमल विद्रुमदल सुधारसे
सींचि धरु गजमोति ॥

(5) मत्त कोकिल बेनु बीना
नाद त्रिभुवन भास ।
मधुर हासें पसाहि आनलि
करए वचन विलास ॥

(6) अमर भूधर सम पयोधर
महघ मोतिम हार ।
जनि,
हेम निर्मित्त सम्भुसेखर
गङ्ग निर्म्मल धार ॥

(7) करभ कोमल कर सुशोभित
जङ्घ जुअ आरम्भ।
मदन मल्ल बेआम कारने
गढ़ल हाटक थम्भ ॥

(8) सुकवि एहो कण्ठहारे गाओल
रुप सकल सरुप।
देवि लखिमा कन्त जानए
राज सिवसिंह भूप।



**अर्थ :** रूप वर्णन नायिकाक । आलंकारिक । कविक उक्ति।

(1) कामदेवक उपवन रूपी केसमे सिन्दूरक रेखा अछि, से लगैत अछि जेना सघन मेघमे अरुणदेव अपन सुन्दर शरीर देखा रहल होथि। (2) आइ गजगामिनी त्रिभुवन सुन्दरीकेँ देखल तँ लागल जेना विधाता कामदेवक विश्वविजयक लता (पताका) बनओने होथि। (3) नायिकाक मुह शरदक चान सन सुन्दर छनि, आँखि चंचल। मानू निर्मल स्वर्ण-कमल (=मुह) पर एक जोड़ा खंजन (आँखि) खेलाइत हो। (4) ठोर नव-पल्लव सन सुन्दर छनि आओर दाँत दाड़िमक दाना जकाँ चमकैत छनि, जेना गजमुक्ता (=दाँत) अमृतसँ धोकेँ निर्मल मूँगा (=ठोर) केर पात पर राखल हो। (5) संसार भरिमे जतेक मदमत्त कोकिल, वंशी आ वीणाक मधुर स्वर अछि, से सभ मानू मधुर हाससँ सजाय वचन-विलास (मधुर संलाप) करबाक हेतु एहि नायिकाक बोल रूपमे आनल गेल हो। (6) नायिकाक स्तन देवपर्वत सुमेरु सदृश छनि आ ताहिपर बहुमूल्य मोतीक हार अछि, जेना स्वर्णमय शिवक माथसँ गंगाक निर्मल धार बहैत हो। (7) नायिकाक दुनू जाँघ हाथीक कोमल सूँढ-सन लगैत अछि; मानू कामदेव रूपी पहलमानक व्यायाम हेतु सोनाक स्तम्भ गढ़ल गेल हो। (8) सुकवि कण्ठहार विद्यापति ई गीत गाओल जाहिमे कामिनीक सभ रूपक यथार्थ (सरुप) वर्णन अछि। एकर रस लखिमा देवीक कन्त राजा शिवसिंह जनैत छथि।

स्रोत- तरौनी तालपत्र, गीत 540

पाठ-सुधार- सुन्दर नहि, सिन्दूर। पल्लव नव नहि, नव पल्लव। अपर नहि, अमर।

## ॥ एकतीस ॥

(1) के बोल पेम अमिअ रस धार
अनुभवि बूझिअ गबउ अङ्गार।

(2) खएले विष सखि हो परकार
बड़ मारष ओ देषितहि मार ॥ ध्रु०॥

(3) एत सवे सजलह हमरा लागि
तूरे बेढि घर खोसलि आगि।

(4) तञे ओठपातरि कि बोलिओ तोहि
बड कए अपथ चलओलए मोहि ॥

(5) तोरा करम धरम पए साखि
मन्दिओ खाए पडउसिनि राखि ॥
भने विद्यापतीत्यादि ॥



**अर्थ :** उपालम्भ। प्रेम-पराभव। नायिकाक उक्ति सखीक प्रति :

(1) के कहत जे प्रेम अमृतक रस-धार थिक। अनुभव कऽ बूझल जे ई तँ गोइठाक आगि थिक (धधरा नहि, तरहितर छाह)। (2) हे सखी, विष जँ खयबो करब तँ ओकर प्रतिकार (औषध) छैक, मुदा प्रेम तँ एहन घातक होइत अछि जे देखैत देरी मारि देत। (3) ई सैभ प्रपंच (कृष्णसँ प्रेम करबाक प्रलोभन) तोँ हमरा लेल कयलह। तोँ तँ आगि तूरमे लेपटा कऽ हमरा घरमे खोँसि देलह। (4) तोँ ठोराहि छह (तोरा पेटमे कोनो बात टिकैत नहि छहु), तोरा की कहबहु। तोँ हमरा (कृष्णसँ नेह लगा) कुबाटमे धकेलि देलह। (5) तोहर अपने करम आ धरम साक्षी होयतहु। डाइनिओ पड़ोसिनिकेँ बकसि ककरहु खाइत अछि (तोँ तँ हमरहु नहि छोड़लह)।

स्रोत- नेपाल तालपत्र गीत 102

**पाठ-सुधार-** अनुभवे नहि अनुभवि, मन्दिउ नहि, मन्दिओ।

## ।। बत्तीस ।।

(1) कोन गुन पहु परवस भेल सजनी
बुझल तनिक भल मन्द।
(2) मनमथ मन मथ तनि बिनु सजनी
देह दहए निसि चन्द ॥
(3) कहओ पिसुन सत अवगुन सजनी
तनि सभ मोहि नहि आन।
(4) कतेक जतन सँ मेटिअ सजनी
मेटए न रेख पखान।
(5) जँ दुरजन कटु भाषए सजनी
मोर मन न होए विराम।
(6) अनुभव राहु पराभव सजनी
हरिन न तेज हिमधाम।
(7) जइओ तरणि जल सोखए सजनी
कमल न तेजए पाँक।
(8) जे जन रतल जाहिसँ सजनी
कि करब विहि भए बाँक
(9) विद्यापति कवि गाओल सजनी
रस बूझए रसमन्त।
(10) राजा सिवसिंह मन दए सजनी
मोदवती देइ कन्त

अर्थ : प्रीति-विघटन। नायिकाक उक्ति सखीक प्रति।

(1) जानि नहि, कोन कारणेँ (हमर कोन अपराधेँ) प्रियतम परवश भेलाह (परनारीमे फँसलाह)। हमरा तँ हुनक सभ गुण अवगुण बूझल अछि। (2) तनिका बिना हे सजनी, कामदेव हमर मनकेँ मथि रहल अछि। चान दिन-राति देह झरकबैत अछि। (3) पिशुन (चुगिला) सभ लाख हुनक अवगुण (दोष) कहओ हमरा लेखेँ तँ हुनका-सन प्रिय आन केओ नहि अछि। (4) पाथर परक रेखाकेँ कतबो जतनसँ मेटबय चाहब, ओ नहि मेटायत। (5) दुर्जन कटु (झगड़ा लगयबाक बात) बाजय तैओ हमर मन हुनकासँ टूटत नहि। (6) चन्द्रमा राहुसँ कतबो पराभव पबैत अछि, तैओ ओ हरिण (अपन दाग)केँ नहि छोड़ैत अछि (हमरा कतबो पराभव होयत, हम हुनका नहि छोड़ि सकैत छी)। (7) सूर्य जलकेँ सोखि लैत छथि, तैओ कमल पाँकके नहि छोड़ैत अछि। (8) जे जकरासँ रतल रहैत अछि, विधि प्रतिकूल भैयो कऽ की करताह (ओकर प्रेम नहि तोड़ि सकैत छथि। (9-10) विद्यापति कवि ई गीत गओलनि। रस बुझताह मोदवती देवीक पति रसिक राजा शिवसिंह।

स्रोत- ग्रिअर्सन

# ।। तैंतीस ।।

(1) खने खने नयन कोन अनुसरई।
खने खने वसन धूलि भरे भरई ।।

(2) खने खने दसन-छटा छुट हास।
खने खने अधर आगु करु बास ।।

(3) चउँकि चलए खने खने चलु मन्द।
मनमथ-पाठ पहिल अनुबन्ध ।।

(4) हिरदय-मुकुल हेरि हँस थोर ।।
खने आँचर देइ खने होए भोर ।।

(5) बाला सैसव तारुन भैंट।
लखए न पारिअ जेठ कनेठ।

(6) विद्यापति कह सुन वर कान
तरुनिम सैसव चिन्हइ न जान ।।

**अर्थ :** वय: सन्धि। कविक उक्ति–

(1) खन आँखि कोन दिस चल जाइत छैक; खन धूरा कपड़ामे भरि लैत अछि। (2) खन हँसैत अछि, दाँत चमकि उठैत छैक, खन दाँत ठोर पर कऽ लैत अछि। (3) खन चमकिकें चलैत अछि तँ खन मन्द-मन्द। कामदेवक पहिल पाठक फल यैह थिक। (4) खन स्तनक अंकुर देखि कनेक मुसकाइत अछि, खन ओहिपर आँचर दैत अछि, खन सुधि नहि रहैत छैक। (5) नायिकामे शैशव आ यौवनक संगम (मोकाबला) भेल अछि। के जेठ कं कनिष्ठ से बूझब कठिन। (6) विद्यापति कहैत छथि, हे कृष्ण, सुनू। राधा एखन जानि नहि पवैत अछि जे ओ शैशव अवस्थामे अछि आ कि तारुण्य अवस्थामे।

स्रोत- नगेन्द्र नाथ गुप्त, गीत 9

पाठ-सुधार- धूलि तनु नहि, धूलि भरे। हेरि हेरि नहि, हेरि हँस। दए नहि, देइ। अनेक नहि, कनेठ।

## ॥ चौंतीस ॥

(1) खरि नरि बेगे भासलि नाइ ।
धरए न पारलि बाल कन्हाइ ॥
तेँ धँसि जमुना भेलाहु पार ।
फूटल बलया टूटल हार ॥

(2) ए सखि ए सखि बोल न मन्द
बिरुह बचने बाढ़ए दन्द ॥
कुण्डल खसल जमुन माझ ।
ताहि जोहइते पड़लि साँझ ।

(3) अलक तिलक तेँ बहि गेल ।
सूध सुधाकर वदन भेल ॥

(4) तटनि तट न पाइअ वाट ।
तेँ कुच गड़ल कठिन काँट ॥

(5) भनहि विद्यापति नहि अवसाद ।
वचन कउसले जिनिअ वाद ॥



अर्थ : रति चिह्नगोपन। कृष्णसँ संगम कऽ आयलि राधा सखीसँ लाथ करैत छथि : (1) नदीक तेज धारामे नाओ भासि गेल। कन्हाइ जे एखन नेना अछि, नाओकेँ सम्हारि नहि सकल। तेँ पानिमे पैसि जमुना पार कयल। लहठी फूटि ग्रेल आ हार टूटि गेल। (2) हे सखी, कलंक नहि लगाबह। एहिसँ विरुद्ध (अन्यथा) बजबह तँ झगड़ा लागि जायत। कानक कुण्डल माझ धारमे खसि पड़ल। तकरा तकैत-तकैत साँझ पड़ि गेल। (3) तेँ पसाहिन पानिमे धोखरि गेल आ मुह चान-सन शुद्ध (साफ) भऽ गेल। (4) नदीक कातमे बाट भोतिआ गेल। काँटे-कुसे ठलहुँ तेँ छाती मे काँट गाड़ि गेल। (5) विद्यापति कहैत छथि, कोनो चिन्ता नहि, वचनक कौशलसँ वाद जीतल जा सकैत अछि।

स्रोत- तरौनी तालपत्र, गीत 326

पाठ सुधार- कुन्तल नहि, कुण्डल। गाउल नहि, गड़ल। निअ नहि, न।

## ।। पैंतीस ।।

(1) गगन गरज मेघा उठलि धरणि थेघा
पचशर हिय गेल सालि।
से धनि देखलि खिन जिउति आजुक दिन
के जान के होइति कालि ।।

(2) माधव मन दयसुन तसु बानो।
कुजन निरूपि सुजन सखि सङ्गति
जे किछु कहए सयानी ।।

(3) की हम साँझक एकसरि तारा
भादव चौठिक चन्दा।
ऐसन कए पियाजे मोर मुख मानल
मो पति जीवन मन्दा ।।

(4) वामहु गति जत समदि पठओलनि
से सबे कहि कहि गेलि।
तेरसि तिथि ससि सामर पख निसि
तेसनि दसा मोरि भेलि ।।

(5) भनइ विद्यापति सुन वर जौवति
मने जनु मानह आने।
राजा सिवसिंह रूपनाराएन
लखिमापति रस जाने ।।

**अर्थ :** प्रीति-विघटन। सखी कृष्णकेँ राधाक दुखड़ा सुनबैत छनि :

(1) आकाशमे मेघ गरजल। राधा (दुर्बलतावश) धरतीक अवलम्ब कऽ उठलीह। कामदेव हिआ सालि गेलनि। हुनका परम खिन्न (दुबराइलि) देखलियनि। आइ धरि तँ कोनहुना जीतीह, काल्हि की होयतनि से के जानय। (2) हे कृष्ण, राधाक समाद मन दऽ सुनू। के सुजन के दुर्जन तकर विचार कऽ, सयानि (विवेकवती) राधा जे किछु कहैत छथि से सुनू। ओ कहैत छथि-(3) की हम साँझक एकाकी तारा थिकहुँ, आकि भादबक चौठिक चान थिकहुँ ? लगैत अछि प्रियतम हमर मुहकेँ सैह दुनू बुझलनि। हमरा लेखे जीवन जंजाल भऽ गेल। (4) प्रतिकूल रूपहुँ.....(अर्थ अस्पष्ट)। कृष्णपक्षक तृतीया तिथिक राति चन्द्रमाक जेहन क्षीण अवस्था होइत अछि, हमर दशा तेहने भऽ गेल अछि। (5) विद्यापति कहैत छथि, हे राधा, हमर बात सुनू। मनमे अन्यथा नहि मानू (कृष्ण अहाँक अनुकूले छथि)। एहि गीतक रस ज्ञाता थिकाह लखिमा देवीक पति राजा शिवसिंह रूपनारायण।

स्रोत- तरौनी तालपत्र, गीत 756

**पाठ-सुधार**-सुजन निरूपि......सयानी अस्पष्ट। वामहु गति जन.....अस्पष्ट। दसमि नहि, तैसनि।

## ।। छत्तीस ।।

(1) चन्दा जनु उग आजुक राती ।
पिया कें लिखिए पठाउबि पाती ।।

(2) साओन सञो हमे करब पिरीती ।
जत अभिमत अभिसारक रीती ।।

(3) अथवा राहु बुझाओब हसी ।
पिबि जनु उगिलह सितल ससी ।।

(4) कोटि रतन जलधर तोहे लेह ।
आजुकि रअनि घन तम कए देह ।।

(5) भनइ विद्यापति सुभ अभिसार ।
भल जन करथि परक उपकार ।।



**अर्थ** : अभिसार । कृष्णाभिसारिका । अभिसारक तैयारी करैत नायिकाक स्वगत उक्ति :

(1) हे चान, तों आजुक राति नहि उगह (किएक तँ हमरा अन्हारमे अभिसार करबाक अछि)। पत्र लिखि प्रियतमकें पठाय दैत छियनि जे हम भेंट करय आबि रहलि छी। (2) साओन माससँ हम नेह जोड़ब किएक तँ एहि मासमे अन्धकार बेसी रहैत छैक तें अभिसारक अनुकूल अवसर भेटत। (3) अथवा हँसिकें (प्रसन्न मुद्रामे) राहुकें बुझायब जे शीतल चानकें पीबह तँ उगिलह नहि। (4) हे मेघ, जतेक रत्न लेबह ततेक लैह, आ तकर बदला आइ राति घनघोर अन्हार कऽ दैह। (5) विद्यापति कहैत छथि, अहाँक अभिसार मंगलमय हो। भल मानू आनक उपकार करैत छथि।

स्रोत- तरौनी तालपत्र, गीत 286

पाठ-सुधार- सावन नहि, साओन।

## ।। सैंतीस ।।

अरुन कमल कदली विपरीत
हास' कला से हरए साँचीत।
के पतिआओब एहु परमान
चम्पकें कएल जुबति निरमान ।। ध्रु०।।
ए रे माधव पलटि निहार
अपरुव देखिअ जुबति अवतार ।।
कूप गभीर तरङ्गिनि तीर
जनमु सेमार लता विनु नीर
चहकि चहकि दुइ खञ्जन खेल
काम कमान चान्द उगि गेल ।।
ऊपर हेरि तिमिरें करु वाद
धमिलें कएल ताकर अवसाद।
विद्यापति भन बुझ रसमन्त
राए शिवसिंह लखिमा देवि कान्त ।।



**अर्थ :** रूपवर्णन। सखी कृष्णकें राधाक रूपवर्णन कऽ अनुराग जगबैत छथि :

(1) लाल कमल (चरण) पर उनटाओल केराक थम्ह (जाँघ) ठाढ़ अछि आओर से हंसक संचित कला (मनोरम चालि) हरण कयने अछि। ई तथ्य के पतिआयत जे चम्पाक फूलसँ एक युवतीक (राधाक देह) रचित भेलि। हे कन्हाइ, तों कने पलटिकें देखह। एक अद्‌भुत युवतीक प्रादुर्भाव देखि पड़ैत अछि। नदीक (त्रिवलीक) तटपर एक गहीर कूप (नाभि) बनल अछि आओर ओहिमे पानि नहि अछि तैओ सेमार (रोमावली) भए गेल छैक। दुइ गोट खंजन (आँखि) चंचलतापूर्वक खेलाय रहल अछि। कामदेवक धनुष (भौंह) अछि आ चान (मुख) उगल अछि। उपर दिस धनुष आ चानकें देखि अन्धकार (केश पाश) विवाद ठानि देलक।....(?) विद्यापति एहि गीतक रचयिता थिकाह आओर लखिमा देवीक पति रसिक राजा शिवसिंह एकर रस ज्ञाता थिकाह।

**स्रोत**- रामभद्रपुर तालपत्र, गीत 44

**पाठ-सुधार**- चरन नहि, अरुन। पुहवि नहि, युवति। धमिलें कएल.....अस्पष्ट।

## ।। अठतीस ।।

(1) चरणायुध धुनि सुनि जनु होए।
श्रवण मुदए छलेँ करतलेँ गोए ।।

(2) अरुण किरण डरे मुदए गवाष।
षने षने बाढ़ अधिक अभिलाष ।।

(3) सरसिज सौरभ मने अनुमान।
मृगमदे करए तिलक निरमान ।।

(4) कैतवेँ करए सकल समधान।
रमणि जोगाब रसिक जनु जान ।।
भनइ विद्यापति.....।।



अर्थ : रति विलास। राति भरि रमण कय नहु तृप्ति नहि भेलैक तेँ नायिका चाहैत अछि जे भोर भेलैक से नायक नहि बूझय। कविक उक्ति–

(1) चरणायुध (मुरगा)क बाजब नायक सुनथि नहि ताहि लेल नायिक बहाना बना नायकक कान हाथसँ झँपैत अछि। (2) प्रभात-किरण नहि आबय ताहि लेल जङला बन्द करैत अछि। छन-छन रमण करबाक इच्छा बढ़ल जाइत छैक। (3) मनमे अनुमान भेलैक जे कमलक सौरभ आबि रहल अछि (कमल भोरेमे फलकैत अछि, सौरभसँ प्रियतम बूझि ने जाथि जे परात भेल)तेँ कस्तूरीक लेप बनबैत अछि (जाहिसँ कमलक सौरभ ओहिमे लीन भऽ जाय)। (4) छलपूर्वक आनो सकल समस्याक समाधान करैत अछि। रमणी एहन जोगाड़ करैत अछि जे परात भेल से प्रियतम जानि नहि पाबथि-रमंण आओर चलैत रहय।

स्रोत- भाषागीत संग्रह, गीत 96

## ॥ उनचालीस ॥

(1) चरित चातुर चिते बेआकुल
मोर मोर अनुबन्धे ।
पूत कलत्त सहोदर बान्धव
सेष दसा सव धन्धे ना ॥
(2) ए हर गोसाञि नाम मो जनु देह उपेषि ।
जम अगा मूह उत्तर छाडत
जबे बुझाआत लेखी ॥
(3) अपथ पथ चरण लाओल
भगति मति न देला ।
पर धन धनि मानस लाओल
मिथ्या जनम गेला ॥
(4) कपट नरि पकु कलेवर
गीडल मदन गोहे ।
भल मन्द हमे किछु न गुनल
समय बहल मोहे ॥
(5) कएल मञे उचित भेल अनुचित
आवे मन पचतावे ।
आवे कि करब सिर पए धुनव
गेल दिन नहि आवे ॥
(6) भन विद्यापति सुनु महेसर
तैलोक आन न देवा ।
चन्दल देवि पति बैद्यनाथ
चरन सरन देवा॥

**अर्थ :** वैराग्य गीत। वार्धक्य अयला पर कवि जीवनसँ निराश भऽ परलोक चिन्तन करैत छथि :

(1) चरित (जीवन) केर चातुर (चतुर्थ) चरणमे आबि चित्त व्याकुल अछि। ममत्वक लागि बढ़ल जाइत अछि। पुत्र, कलत्र (पत्नी), सहोदर भाइ-बन्धुवर्ग सभ अन्तिम अवस्था (बुढ़ारी)मे चिन्ते टा बढ़बैत छैक। (2) हे गोसाइँ शिव, हे नाथ, हमरा उपेखि नहि दैह। जखन यमराजक समक्ष होयब आ ओ कर्मक लेखा-जोखा पुछताह तखन हमर मुह उत्तर देब छोडि़ देत। किछु नहि फुरत जे की उत्तर दियनि। (3) कुमार्ग मे डेग दैत रहलहुँ। भक्ति (देवाराधना) दिस ध्याने नहि देल। आनक धन, आनक स्त्रीपर मन गड़ल रहल। जीवन वृथा चल गेल। (4) देह कपट-नदी (मायाजाल)मे खसि पड़ल। कामदेव रूपी गोंहि तकरा गीड़ि लेलनि (सम्भोगसँ शरीर क्षीण होइत गेल)। की नीक, की बेजाय किछु नहि सोचल। मोह (अज्ञान)मे समय बितैत गेल। (5) जीवनमे जे किछु कयल से कयल तँ उचित बूझि किन्तु भेल अनुचित। आब मनमे पश्चाताप होइत अछि। किन्तु आब की करब? सिरे टा धुनब। गेल दिन घुरिकेँ आओत तँ नहि। (6) विद्यापति कहैत छथि, हे महेश्वर, सुनू। हमरा लेल एहि तीनू लोकमे आन कोनो देवता नहि छथि। हे चन्दल देवीक पति वैद्यनाथ हमरा अपन चरणमे शरण देताह।

स्रोत- नेपाल तालपत्र, गीत 135

पाठ-सुधार- डर हटाउ। दुर हटाउ। सून नहि, सुनु। गति हटाउ।

## ।। चालीस ।।

(1) चानन भरम सेवल हम सजनी
पुरत सकल मन काम ।
कण्टक दरस परस भेल सजनी
सीमर भेल परिनाम ।।

(2) एकहि नगर बसु माधव सजनी
परभाविनि बस भेल ।
हम धनि एहनि कलावति सजनी
गुन गौरव दूरि गेल ।

(3) अभिनव एक कमल फुल सजनी
दोना नीमक डार ।
सेहो फुल ओतहि सुखाएल सजनी
रसमय फुलल नेवार ।।

(4) विधिवस आज आओत पुनि सजनी
एत दिन ओतहि गमाए ।
कोन परि करव समागम सजनी
मोर मन नहि पतिआए

(5) भनहि विद्यापति गाओल सजनी
उचित आओत गुनसाह ।
उठ बधाव करु मन भरि सजनी
आज आओत घर नाह ।।

**अर्थ** : विरह गीत। प्रेमीसँ उपेक्षिता नायिका सखीकेँ अपन दुखड़ा सुनबैत अछि। भाषा ओ भाव परम सोझ। किछुए पाँतीक व्याख्या अपेक्षित।

(1) हे सखी, चाननक गाछ बूझि सेवल जे मनक कामना पूरत, परन्तु अन्ततः ओ सीमर सिद्ध भेल, केवल काँट देखल आ छूअल। (2) एकहि नगरमे रहैत पिया परनारीक वश भऽ गेल। हम कलावती (रस-विलासमे पटु छी, परन्तु हमर सभ गुण-गौरव व्यर्थ भऽ गेल। (3) हम एक दोनानीप (द्रोण कदम्ब)केर डारि पर कमल जकाँ फुलयलहुँ। परन्तु ओ कमल ओहि डारिअहि पर सुखा गेल (ओकरा केओ अपन शृंगार नहि बनओलक)। ओम्हर रसमय नेबार फुलायल (दोसरि नारी हमर प्रियतमकेँ रिझा धन्य भेलीह)। (4) एतेक दिन ओतहि (पर-नारी लग) बिता आइ हमर प्रियतम पुनः घर घुरि आओत। कोना ओकरा लग जाउ? मनमे विश्वास नहि होइत अछि। विद्यापति ई गीत गाओल। ओ कहैत छथि, ठीके अहाँक गुणग्राही पहु अओताह। भरि मन उछाह भरू, पहु आइ घर घुरताह।

स्रोत- ग्रिअर्सन, गीत - 43

**पाठ-सुधार**- सेबलि नहि, सेबल। कन्तक नहि, कण्टक। आयल नहि, आओत। पतिआय नहि, नहि पतिआय।

## ॥ एकतालीस ॥

चानन भेल विसम सर रे
भूसन भेल भारी।
सपनहु नहि हरि आएल रे
गोकुल गिरधारी ॥
एकसर ठाढ़ि कदमतर रे
पथ हेरिअ मुरारी।
हरि विनु देह दगध भेल रे
झामर भेल सारी ॥
जाह जाह तोहेँ ऊधव हे
तोहेँ मधुपुर जाहे।
चन्द्रवदनि नहि जीउति रे
बध लागत काहे।
भनहि विद्यापति गाओल रे
सुनु गुनमति नारी।
आजु आओत हरि गोकुल रे
पथ चलु झट झारी।



**अर्थ :** विरह-गीत। भाषा ओ भाव परम सरल। व्याख्या अपेक्षा नहि। विरहिणी राधा स्वगत विलाप करैत छथि।

**स्रोत-** ग्रिअर्सन, गीत 64

पाठ-सुधार- हेरथि नहि, हेरिअ। दे नहि, दए।

## ।। बेयालीस ।।

(1) चान्दक तेज रअनि पर जोति ।
रजत सहित परिहल धनि मोन्ति ।।

(2) चान्दने तनु अनुलेप सिङ्गार ।
धम्मिलें धोएल कुन्दक हार ।। ध्रु०।।

(3) हे हरि कि कहब अनुपम भाँन्ति ।
सखि अभिसार दिवस सम राति ।।

(4) नअनक काजर दुर कर धोए ।
चान्दक उदअँ कुमुद जनि होए ।।

(5) नअन चान्द दुहु एकत रङ्ग ।
जमुना जलेँ विपरीत तरङ्ग ।।

(6) जमुना तरि धनि आइलि राति
तुअ अनुरागेँ अङ्गिरि कत साति ।।

(7) विद्यापति भन अभिनव कान्ह
सिवसिंह लखिमा देवि रमान ।।



**अर्थ** : अभिसार-गीत। शुक्लाभिसारिका। राधाक सखी कृष्णसँ कहैत छथि–

(1) चन्द्रमाक तेज किरणसँ राति ज्योर्तिमय भऽ गेल। राधा चानीमे जड़ल मोतीक आभूषण पहिरलक। (2) देहमे चानन लेपि साज-सिङ्गार कयलक। खोपामे कुन्द फूलक माला लगओलक। (3) हे कन्हाइ, ओकर ई अनुपम शोभाक वर्णन कतेक करू। एहन दिन-सन चकमक रातिमे हमर सखी अभिसारमे चललि। (4) आँखिक काजर धो-पोछि मेटाओल। तखन ओकर आँखि ओहने भऽ गेल जेहन चान उगला पर कुमुद। (5) आँखि आ चान दूनू एक रंग भेल। (आँखि धोला पर ओहने भऽ गेल जेहन चान), यमुनाक जलमे तरङ्ग विपरीत रंग धयने हो (श्वेत-श्यामक बदला केवल श्वेत)। (6) राति यमुना नदी पार कऽ राधा तोहर प्रेमवश अनेक कष्ट उठा तोहरा लग पहुँचलि। (7) विद्यापति कहैत छथि, लखिमा देतीक रमण शिवसिंह मानू एहने कृष्ण (रसिक) थिकाह।

स्रोत-रामभद्रपुर तालपत्र, गीत 166

**पाठ-सुधार-** भार नहि, हार। हारि नहि, हे हरि। कए नहि, कर। राए शिवसिंह नहि, शिवसिंह ।

## ॥ तैंतालीस ॥

(1) चान्दवदनि धनि चान्द उगत जबे।
दुहुक उजोर तोहि दुरहि लखत सबे ॥

(2) चल गजगामिनि जाबे तरुण तम।
किम्बा कर अभिसारहिं उपसम ॥ धु०॥

(3) चान्दवदनि धनि रयनि उजोरी।
कओने परि गमन होएत सखि तोरी ॥

(4) तोहर वदन परिमल दुरबार।
दूर सओ दुजने लखब अभिसार ॥

(5) चौदिस चकित नयन तोर एह।
तोहि लए जाइते मोहि सन्देह ॥

(6) अगिरि अएलाहु परआइत काज।
विफल भेले मोहि जाइते लाज ॥
भनइ विद्यापति ....



**अर्थ :** अभिसार-गीत। कृष्णाभिसारिका। सखी राधाकेँ अभिसार हेतु प्रेरित करैत छथि :

(1) हे चन्द्रमुखी धनि, जखन चान उगि जायत तखन एक दिस तोहर गोर देहक जोति आ दोसर दिस चानक जोति दुनूक इजोतेँ सभ केओ तोरा दूरहिसँ देखि जयतहु। (2) तेँ हे गजगामिनी धनि, जा गाढ़ अन्हार अछि, ताबहि अभिसार करह; नहि तँ आजुक अभिसार स्थगित करह। (3) हे चन्द्रमुखी धनि, इजोरिआ रातिमे तोहर अभिसार कोना भऽ सकत। (4) तोहर मुखक सौरभ....दुर्वार अछि (सौरभकेँ केओ रोकि नहि सकैत अछि)। दुष्ट लोकसभ तोहर अभिसारकेँ दूरहिसँ देखि जयतहु। (5) तोहर ई नयन चारू दिस चौंकैत रहैत छहु (लोक तोहर आँखिक चमकहिसँ तोरा देखि जयतहु), तेँ तोरा लऽ जयबामे हमरा बड़ सन्देह होइत अछि जे सफल होयब कि नहि। (6) ओह, हम तँ कृष्णसँ एहन काज गछि अयलहुँ जे आनक (राधाक) वशमे अछि (राधा सम्हरतीह तखनहि सफल होयब)। ताहिमे जँ विफल भेलहुँ तँ कृष्णक सोझाँ जयबहुमे लाज होयत।

स्रोत- नेपाल तालपत्र, गीत 28

**पाठ-सुधार-** मोरी नहि, तोरी। तोहे परिजन नहि, तोहर वदन। दुरजने नहि, दुजन। देह नहि, एह।

## ॥ चौआलीस ॥

(1) चाँद सार लए मुख घटना करु
लोचन चकित चकोरे।
अमिअ धोए आंचरे अनि पोछल
दह दिस भेल उजोरे॥

(2) कामिनी कोने गढ़ली।
रूप सरूप मोहि कहइते असम्भव
लोचन लागलि रहली॥

(3) गुरु नितम्ब भरे चलए न पारए
माझ खीनि अधिकाई
भाँगि जाइति मनसिजे धरि राखलि
त्रिबलि लता अरुझाइ॥

(4) भनइ विद्यापति अद्‌भुत कौतुक
ई सब वचन सरूपे।
रूपनरायन ई रस जानथि
सिवसिंह मिथिला भूपे॥



अर्थ : रूपवर्णन। कवि नायिकाक रूपक वर्णन करैत छथि अपने मुहेँ–

(1) विधाता चानक सार (सौन्दर्य तत्व) लऽ नायिकाक मुहक रचना कयल (नायिकाक मुह चान-सन)। ओकर आँखि चंचल चकोर पक्षीसँ बनाओल। शरीर (मूर्ति) बनि गेलापर विधाता ओकरा अमृतसँ धोलनि आओर आँचर (कपड़ाक टुकड़ा)सँ पोछलनि। ओहि मूर्तिक चमकसँ दसो दिशामे इजोत पसरि गेल। (2) जानि नहि कोन विधाता एहि नायिकाक निर्माण कयल। ओकर रूपक यथार्थ (सरूप) वर्णन करब हमरा लेल असम्भव। ओ मानू हमर आँखिमे लागलिए रहि गेलि। (3) भरिगर नितम्बक भारेँ ओ चलि नहि सकैत अछि। ताहि पर हाय, माझ (डाँड़) बड़ क्षीण (पातर) छैक। कामदेवकेँ आशंका भेलनि जे टूटि ने जाय, तेँ ओ नायिकाक डाँड़केँ त्रिवलिरूपी लतामे ओझरा (बान्हि) देलनि। विद्यापति कहैत छथि, ई सभ अद्‌भुत कुतूहलक बात थिक। हमर ई सभ वचन (कथन) सत्य (सरूप, यथार्थ) थिक। एकर रस(मर्म) मिथिलाक राजा शिवसिंह जनैत छथि।

स्रोत- तरौनीतालपत्र, गीत 21

पाठ-सुधार- लागि नहि, लागलि। खीनिम निमाई नहि, खीनि अधिकाई।

# ॥ पैतालीस ॥

(1) जनम होअए जनु जओ पुनु होइ।
जुवती भए जनमए जनु कोइ॥

(2) होइह जुवति जनु हो रसमन्ती।
रसओ बुझए जनु हो कुलमन्ती ॥ ध्रु०॥

(3) निधन मागओ विहि एक पए तोही।
थिरता दिह अवसानहु मोही॥

(4) मिलिह सामि नागर रसधारा।
परबस जनु होअ हमर पिआरा॥

(5) होइह परबस बुझिह विचारि।
पाए विचार हार कओने नारि॥

(6) भनइ विद्यापति अछ परकारे।
दन्द समुद होअ जिब दए पारे॥



**अर्थ :** विरह-गीत। नायिका विरहक चरम अवस्था (दसम/अन्तिम दशा)मे पहुँचि मृत्युक कामना करैत ईश्वरसँ प्रार्थना करैत अछि :

(1) नीक तँ थिक जे जनमे नहि हो ; जँ जन्म होअय तँ केओ युवती (नारी) भऽ नहि जनमओ। (2) जँ युवती होअय तँ रसवती नहि होअओ। जँ रसवती होअय तँ कुलवती नहि होअओ। (3) हे विधाता, आब हम केवल एक वस्तु मङैत छिअहु-मृत्यु। आओर मृत्यु भेलाक बादो हमरा स्थिरता (विचारक दृढ़ता) दिहह (जे प्रियतमक प्रति अनुराग बनल रहय)। (4) अग्रिम जन्ममे फेर वैह रसिक नागर स्वामी होथि; हमर प्रियतम परवश (आन नारीमे आसक्त) नहि होथि। (5) जँ परवश होयबो करथि तँ बात बूझथि, हमरा सँ कोन अपराध भेल से बूझि लेथि आ बुझा देथि)। जँ पुरुष विचारवान् होयताह तँ कोनो नारी पराभव मे किएक पड़तीह। (6) विद्यापति कहैत छथि- एकेटा उपाय अछि- एहि द्वन्द्व समुद्रकेँ पार करब।

स्रोत- नेपाल तालपत्र, गीत 58

पाठ-सुधार- होएत नहि, होअ।

## ।। छिआलीस ।।

(1) जमुना तीर बर जुवति केलि कए
ऊठि उगल सानन्दा ।
चिकुर सेमार हार अरुझाएल
जूथे जूथे उग चन्दा ।। ध्रु०।।

(2) मानिनि अपरुब तुअ निरमाने
पाँचेबाने जनि सेना साजलि
अइसन उपज मोहि भाने ।।

(3) आनि पुनिमससि कनक थोए' कसि
सिरिजल तुअ मुख सारा ।
जे सबे उबरल काटि नड़ाओल
से सबे उपजल तारा ।।

(4) उबरल कनक औटि बटुराओल
सिरिजल दुइ आरम्भा ।
सीतल छाह छैले छुइ छाड़ल
छाड़ि गेल सबे दम्भा ।।
भनइ विद्यापतीत्यादि ..........

**अर्थ :** रूपवर्णन। आलंकारिक। नायक मानवती नायिकाकेँ प्रसन्न करबाक हेतु चाटु-वचन कहैत छथि :

(1) यमुनाक नीरमे आनन्दपूर्वक केलि विलास कऽ युवती जलसँ उपर भेलीह। केस रूपी सेमारक लत्तीमे हुनक हार ओझरा गेल, से लागल जेना झुंडक झुंड चान उगल हो। (2) हे मानिनी, अपूर्व छह तोहर सृष्टि। हमरा तँ लगैत छह जेना कामदेव तोरा अपन सेना (विजयवाहिनी) बनओलथुन। (3) मने कामदेव पूर्णिमा चन्द्र आनि, ओकरा सोनक संग थूरि, काट-छाँट कऽ तोहर मुखमंडल बनाओल, आओर जाहि-जाहि अंशकेँ काटि-काटि नेड़ा देलनि ताही सभसँ तारा सभक उद्भव भेल। (4) ताहूसँ जे सोन डगरल तकरा गलाकेँ गोलाकार दू पिण्ड (स्तन बनाओल। रसिक सभ शीतल छाहरिमे ओकरा छूबिकेँ छोड़ि देलक। सभ दम्भ (अभिमान) छोड़ि गेल।

स्रोत- नेपाल तालपत्र, गीत 162.

**टिप्पणी-** एहि गीतक बहुत पाँतीक अर्थ बैसैत नहि अछि।

# ।। सैंतालीस ।।

(1) जय जय भैरवि असुर भयाउनि
पसुपति भामिनि माया।
सहज सुमति वर दिअहे गोसाउनि
गति अनुगति तुअ पाया ।।

(2) वासर रैनि सवासन शोभित
चरण चन्द्रमणि चूड़ा।
कतओक दैत्य मारि मुख मेलल
कतओ उगिलि करु कूड़ा ।।

(3) सामर वरन नयन अनुरञ्जित
जलद जोग फुल कोका।
कट - कट विकट ओठ फुट पाँड़रि
लिधुर फेन उठ फीका ।।

(4) घन घन घनन नुपुर कत बाजए
हन हन कर तुअ काता।
विद्यापति कवि तुअ पद सेवक
पुत्र विसरु जनु माता ।।

**अर्थ :** भगवतीक वन्दना। महाकाली (भैरवी)क ध्यान।

(1) हे भैरवी, अहाँक जय हो। अहाँ भैरवी (भयानक स्वरूपा) रहितहुँ केवल राक्षसक हेतु भयाउनि (भयंकर) छी। मायास्वरूपा रहितहुँ शिवक भाविनी (प्रेयसी) छी। हे गोसाउनि (गोस्वामिनी, भगवती), हमरा सहज (सरल) आ सुमति (नीक विचारबला) होयबाक वर दिअ। अहाँक चरणक अनुगति (परिचर्या) करब यैह एकमात्र हमरा गति (उद्धारक उपाय) अछि। (2) अहाँक चरण दिन-राति शवक आसन पर विराजमान रहैत अछि। अहाँक मस्तक पर चन्द्रमा रूपी चूड़ामणि अछि। बहुतो दैत्यकेँ मारि-मारि अहाँ चिबा गेलहुँ, बहुतो दैत्यकेँ चिबा-चिबा थुकरि देलहुँ। (3) अहाँक मुह श्यामवर्ण अछि, ओ आँखि लाल-लाल, से लगैत अछि जेना कारी मेघ पर दू गोट लाल-लाल कमल फुलायल हो। अहाँ राक्षस सभकेँ जे चिबबैत छी ताहिसँ विकट कटकट ध्वनि होइत अछि। दूनू ठोर पाँडरिक फूल सन लाल लगैत अछि आ ओहिमे शोणितक फेनसँ फोका उठैत अछि। (4) अहाँक डाँड़मे घुंघरू घन-घन घनन (रुनझुन) बजैत अछि, आ हाथक काता हनहन (मारू-मारू) ध्वनि करैत अछि। (5) कवि विद्यापति अहाँक चरण-सेवक छथि। हे माता, पुत्रकेँ नहि बिसरू।

स्रोत- नगेन्द्रनाथ गुप्त, गीत 2

## ॥ सैंतालीस ॥

(1) जय जय भैरवि असुर भयाउनि
पसुपति भामिनि माया।
सहज सुमति वर दिअहे गोसाउनि
गति अनुगति तुअ पाया ॥

(2) वासर रैनि सवासन शोभित
चरण चन्द्रमणि चूड़ा।
कतओक दैत्य मारि मुख मेलल
कतओ उगिलि करु कूड़ा ॥

(3) सामर वरन नयन अनुरञ्जित
जलद जोग फुल कोका।
कट - कट विकट ओठ फुट पाँडरि
लिधुर फेन उठ फीका ॥

(4) घन घन घनन नुपुर कत बाजए
हन हन कर तुअ काता।
विद्यापति कवि तुअ पद सेवक
पुत्र विसरु जनु माता ॥

**अर्थ :** भगवतीक वन्दना। महाकाली (भैरवी)क ध्यान।

(1) हे भैरवी, अहाँक जय हो। अहाँ भैरवी (भयानक स्वरूपा) रहितहुँ केवल राक्षसक हेतु भयाउनि (भयंकर) छी। मायास्वरूपा रहितहुँ शिवक भाविनी (प्रेयसी) छी। हे गोसाउनि (गोस्वामिनी, भगवती), हमरा सहज (सरल) आ सुमति (नीक विचारबला) होयबाक वर दिअ। अहाँक चरणक अनुगति (परिचर्या) करब यैह एकमात्र हमरा गति (उद्धारक उपाय) अछि। (2) अहाँक चरण दिन-राति शवक आसन पर विराजमान रहैत अछि। अहाँक मस्तक पर चन्द्रमा रूपी चूड़ामणि अछि। बहुतो दैत्यकेँ मारि-मारि अहाँ चिबा गेलहुँ, बहुतो दैत्यकेँ चिबा-चिबा थुकरि देलहुँ। (3) अहाँक मुह श्यामवर्ण अछि, ओ आँखि लाल-लाल, से लगैत अछि जेना कारी मेघ पर दू गोट लाल-लाल कमल फुलायल हो। अहाँ राक्षस सभकेँ जे चिबबैत छी ताहिसँ विकट कटकट ध्वनि होइत अछि। दूनू ठोर पाँडरिक फूल सन लाल लगैत अछि आ ओहिमे शोणितक फेनसँ फोका उठैत अछि। (4) अहाँक डाँड़मे घुंघरू घन-घन घनन (रुनझुन) बजैत अछि, आ हाथक काता हनहन (मारू-मारू) ध्वनि करैत अछि। (5) कवि विद्यापति अहाँक चरण-सेवक छथि। हे माता, पुत्रकेँ नहि बिसरू।

स्रोत- नगेन्द्रनाथ गुप्त, गीत 2

## ।। अड़तालीस ।।

(1) सारंग रुचि अम्बर परिहाउल
सेत सारङ्ग कर वामा ।
सारङ्ग वदन दाहिन कर मण्डित
सारङ्ग गति चलु रामा ।। ध्रु०।।

(2) माधव तोरे बोले आनलि राही
सारङ्ग भास पास सञो आनलि
तुरित पठावह ताही ।।

(3) शम्भु घरणि बेरि आनि मेराउलि
हरि सुत सुत धुनि भेला ।

(4) अरुणक जोति तिमिर पिबि उगल
चान्द मलिन भय गेला ।।
भनइ विद्यापतीत्यादि ।।



**अर्थ :** पिहानी । पर्यायवाची आ अनेकार्थक शब्दक ज्ञानक आ प्रतिभा जाँच हेतु जे पद्य रचल जाइत अछि से प्रहेलिका (हिन्दीमे पहेली) कहबैत अछि। एहि गीतमे सखी कृष्णसँ अनुरोध करैत अछि जे भोर भऽ गेल, आब राधाकेँ जाय दिअनु ।

(1) हे कन्हाइ, रातिमे राधाकेँ सारंग रुचि (मेघ सन कारी रंगक) वस्त्र पहिरा, एक हाथमे सारंग (दीप) आ दोसर हाथ सारंग वदन(?)सँ मण्डित कऽ अभिसारमे विदा कयल । ओ सारंग गतिएँ (हाथीक चालिएँ) चललि। (2) हे कन्हाइ, तोहरे अनुरोधेँ राधाकेँ हम सारंग भासक (?) लगसँ तोहरा लग अनलहुँ । आब तोँ ओकरा तुरन्त घर घुराय दैह । (3) ओकरा शिवक गृहिणीक (संध्या)क बेलामे आनि मिला देलिअहु। आब हरि-सुत-सुतक ध्वनि भेल (हरि इन्द्र, तनिक सुत जयन्त, तनिक सुत काकभुसुण्डी अर्थात् काक; कौआ बाजल। (4) अरुण देव अपन ज्योतिसँ अन्धकारकेँ पीबि उगलाह। चन्द्रमा मलिन भऽ गेलाह ।

स्रोत- नेपाल तालपत्र, गी. 142

पाठ-सुधार- जलधर अम्बर रुचि नहि, सारंग रुचि अम्बर। पिडि नहि, पिबि ।

## ॥ उनचास ॥

(1) जाइते देखलि पथ नागरि सजनी गे
आगरि सुबुधि सेयानि।
कनकलता सनि सुन्दरि सजनी गे
विहि निरमाउलि आनि॥

(2) हस्ति गमन जकाँ चलइत सजनि गे
देखइते राजकुमारि।
जनिकर एहनि सोहागिनि सजनी गे
पाओल पदारथ चारि॥

(3) नील वसन तन घेरल सजनि गे
सिर लेल चिकुर समारि।
तापर भमरा पिबए रस सजनि गे
बइसल पाँखि पसारि॥

(4) केहरि सम कटिगुन अछि सजनि गे
लोचन अम्बुज धारि।
विद्यापति एह गाओल सजनि गे
गुन पाओल अवधारि॥



**अर्थ :** रूपवर्णन। एक सखी कोनो सुन्दरीकेँ जाइत देखि ओकर रूप वर्णन अपन सखीकेँ सुनबैत अछि।

(1) हे सखी, आइ एकटा नागरि (रसिक ललना)केँ बाटमे जाइत देखल। ओ बुधिआरि आ चतुर छलि। ओ सोनाक लत्ती सनि छलि। विधाता कतहुसँ आनि ओकरा रचने रहथि। (2) ओकर चालि हथिनी-सन छल, देखबामे ओ राजकुमारि सन लगैत छलि। जनिका एहन सौभाग्यवती पत्नी भेटतनि से मानू चारू पदार्थ (धर्म, अर्थ, काम आ मोक्ष) पाबि गेलाह। (3) ओ देह नील रंगक वस्त्र मे आवेष्टित छल। ओ माथ पर खोपा बन्हने छलि, से लागय जेना भमरा माथ्य पर पाँखि पसरि बैसल-बैसल ओकर रस पीबैत हो। (4) ओकर कटि सिंह-सन छैक आओर आँखि कमल सन। विद्यापति ई गीत गाओल आ ओहि सुन्दरीक गुण (रूप) केर वर्णन कयल।

स्रोत- ग्रिअर्सन, गीत 25

**टिप्पणी-** रचना भाव ओ भाषा दूनू दृष्टियें निम्नतम स्तरक अछि। एहन-एहन रचना विद्यापति सन कविक कथमपि नहि भऽ सकैत अछि।

## ॥ पचास ॥

(1) तातल सैकत वारि बिन्दु सम
सुत मित रमनि समाजे ।
तोहे विसरि मन ताहे समापलुँ
अब मझु हब कोन काजे ॥

(2) माधव हम परिनाम निरासा ।
तोहेँ जगतारन दीन दयामय
अतए तोहर विसवासा ॥

(3) आध जनम हम निन्दे गमायलुँ
जरा सिसु कत दिन गेला ।
जउबने रमनि रङ्ग रसे मातलुँ
तोहि भजब कोन बेला ॥

(4) कत चतुरानन मरि मरि जाओत
न तुअ आदि अवसाना ।
तोहे जनमि पुन तोहे समाओत
सागर लहरि समाना ।

(5) भनइ विद्यापति शेष समन भय ।
तुअ विनु गति नहि आरा ।
आदि अनादिक नाथ कहायसि
भवतारन भार तोहारा ॥

**अर्थ :** भक्ति गीत। वैराग्य भाव । कविक स्वगत उक्ति :

(1) हे भगवान् कृष्ण ! पुत्र, मित्र, पत्नी आ बन्धु वर्ग सभ मानू तप्त बालु-राशि पर रूसल पानिक ठोप थिक। ई जनितहुँ हम तोहरा बिसरि अपन मन ओही पुत्र मित्रादिकेँ समर्पित कऽ देलहुँ। आब हमरा ओ सभ कोन काज देत। (2) हे माधव, हमरा परिणाममे (अन्तमे आबि) केवल निराशा हाथ लागल। तोँ जगतारन (संसारमे सभक उद्धार कयनिहार) थिकह; दीन जनक प्रति सदा दयालु रहैत छह, तेँ आब तोहरहिटा पर आशा-विश्वास अछि। (3) आधा जन्म (जीवन-काल) हम निद्रामे गमओलहुँ, बहुतो दिन शैशव आ वार्धक्यमे गेल। जा यौवन रहल ता रमणीक संग रंग-रभसमे (केलि-विलासमे) मातल रहलहुँ। तोहर भजन कखन करब। (4) कतेक ब्रह्मा जनमैत आ मरैत रहताह (युग पर युग, कल्प पर कल्प बीतैत रहत) परन्तु तोहर ने आदि छहु, ने अन्त। सम्पूर्ण सृष्टि तोहरहिसँ उत्पन्न भऽ-भऽ तोहरहिमे समाइत रहत, जेना समुद्रक लहरि (समुद्रहिमे उत्पन्न होइत अछि आऽ) ओहीमे लीन भऽ जाइत अछि। (5) विद्यापति कहैत छथि, अन्तमे यमराजक भय अछि। तोहरा छोड़ि आन कोनो अवलम्ब नहि अछि। तोँ तँ आदि ओ अनादि सभक नाथ कहबैत छह, आब हमरा पार उतारबाक भार तोरहि पर छहु।

स्रोत- नगेन्द्र नाथ गुप्त

पाठ-सुधार- निधुबने नहि, जउबने ।